Rati Ram
today at 10:45 AM

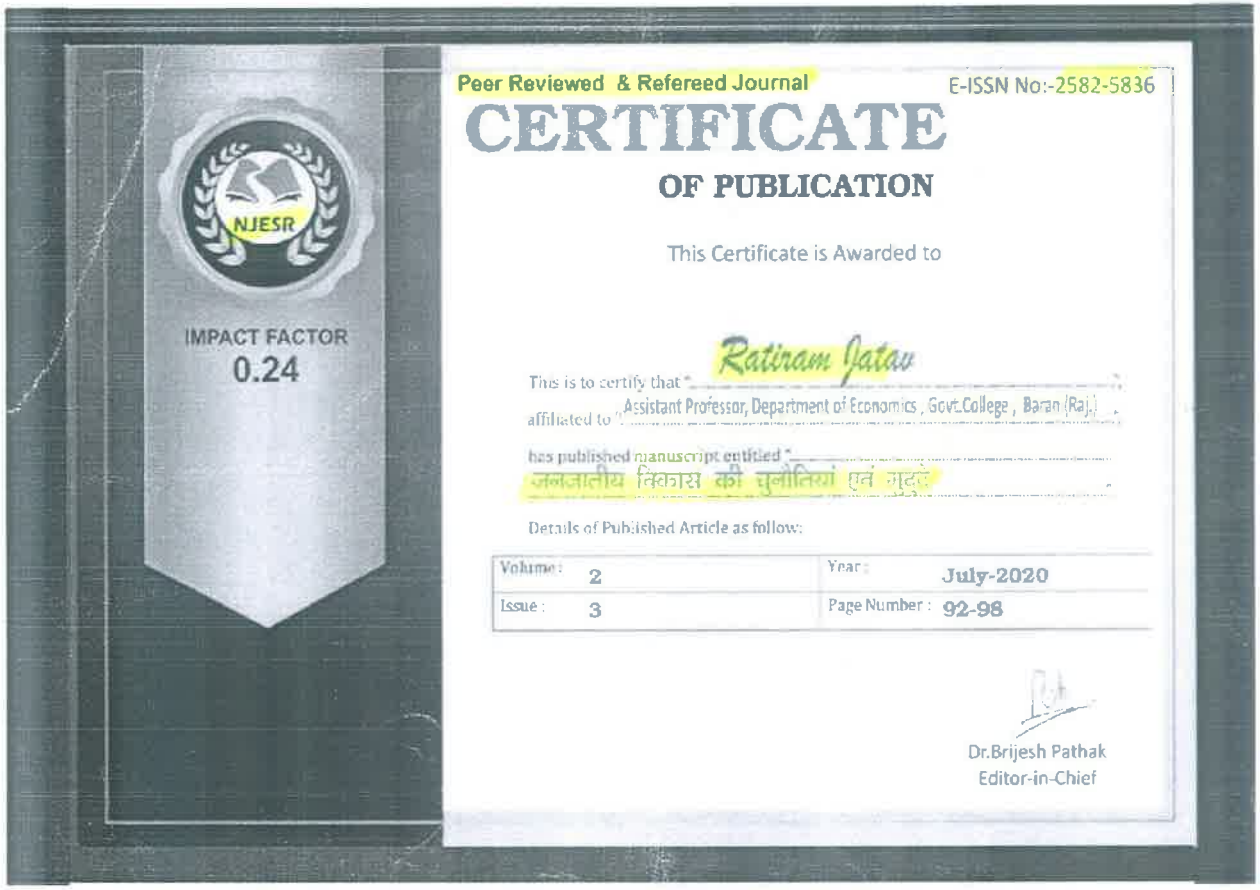

Peer Reviewed & Refereed Journal E-ISSN No:-2582-5836

CERTIFICATE

OF PUBLICATION

IMPACT FACTOR 0.24

This Certificate is Awarded to

This is to certify that Ratiram Jatav

affiliated to Assistant Professor, Department of Economics, Govt.College, Baran (Raj.)

has published manuscript entitled जनजातीय विकास की चुनौतियां एवं मुद्दे

Details of Published Article as follow:

Volume :	2	Year :	July-2020
Issue :	3	Page Number :	92-98

Dr.Brijesh Pathak
Editor-in-Chief

Volume-2, Issue-3, July 2020

E- ISSN 2582-5836

DOI-10.53571/NJESR 2020.1.3.92-98

जनजातीय विकास की चुनौतियां एवं मुद्दे

रतिराम जाटव
सहायक आचार्य
अर्थशास्त्र
राजकीय महाविद्यालय, बारां (राजस्थान)

सारांश –

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और मानवीय विकास का चक्र निरन्तर चलता रहता है। समाज का कर्तव्य है कि समाज का प्रत्येक प्राणी सुखी–सम्पन्न जीवन–यापन करें। इसके लिए सरकार द्वारा विभिन्न प्रकार की योजनाएं संचालित की जा रही है। वर्तमान परिदृष्य में आदिवासी समुदाय का विकास सरकार की प्रमुखता है। देश के सम्पूर्ण विकास में सभी समुदायों का सहयोग आवश्यक है, किसी एक समुदाय को छोड़कर देश का समग्र विकास नहीं हो सकता। इतिहास इस बात का गवाह है कि विश्व की अनेक मानव जातियों ने विकास का कदम एक साथ रखा जिसमें से कुछ मानव जातियों ने अपना विकास परिष्कृत रूप से किया और आधुनिक प्रजातियों में आ गये। किन्तु आधुनिक युग में अनेक आदिम जातियां विलुप्त हो गई या विलुप्त होने के कगार पर है, किन्तु भारतीय आदिम जनजाति ने अपने आपको विपरीत परिस्थितियों में भी जीवित रखा है जो कि भारतीय जनजातियों की प्रमुख विशेषता है।

शब्द संकेत – आदिवासी जनजाती, परिष्कृत, योजनाएं, प्रजाति

1. परिचय –

भारत में सामाजिक विकास का उद्देश्य समाज के सभी वर्गों का विकास करना तथा उन्हें विकास की प्रक्रिया में भागीदार बनाना है। सामाजिक जीवन में उर्ध्वगामी गतिशीलता के लिए सभी लोगों की विकास के परिणामों तक पहुँच तथा उन्हें समान अवसर प्रदान करना है। भारत में बड़ी तेजी से प्रगति हो रही है लेकिन इसका लाभ समाज के सभी वर्गों तक पहुँचाने का लक्ष्य अभी प्राप्त किया जाना बाकी है। वर्तमान में समाज के अनेक ऐसे वर्ग हैं जिनके विरुद्ध भेदभाव का व्यवहार होता है तथा उन्हें स्वतन्त्र रूप से विकास की प्रक्रिया में भाग लेने तथा विकास के परिणामों का लाभ उठाने का अवसर प्रदान नहीं किया जाता है। इन्हें अभावग्रस्त समूह कहा जाता है। कुछ ऐसे समूह हैं, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ा वर्ग, महिलाएँ, अल्पसंख्यक वर्ग इत्यादि। 2011 की जनगणना के

प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

समन्वयक
IQAC CELL
GOVT. College, Rajgarh (Alwar) Rajasthan
राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़ (अलवर) राजस्थान

त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका
ISSN-2321-1504 Nagfani
RNI No. UTTHIN/2010/34408

वर्ष 10 अंक-34 जुलाई - सितम्बर 2020

नागफनी

A Peer Reviewed Refereed Journal

अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य

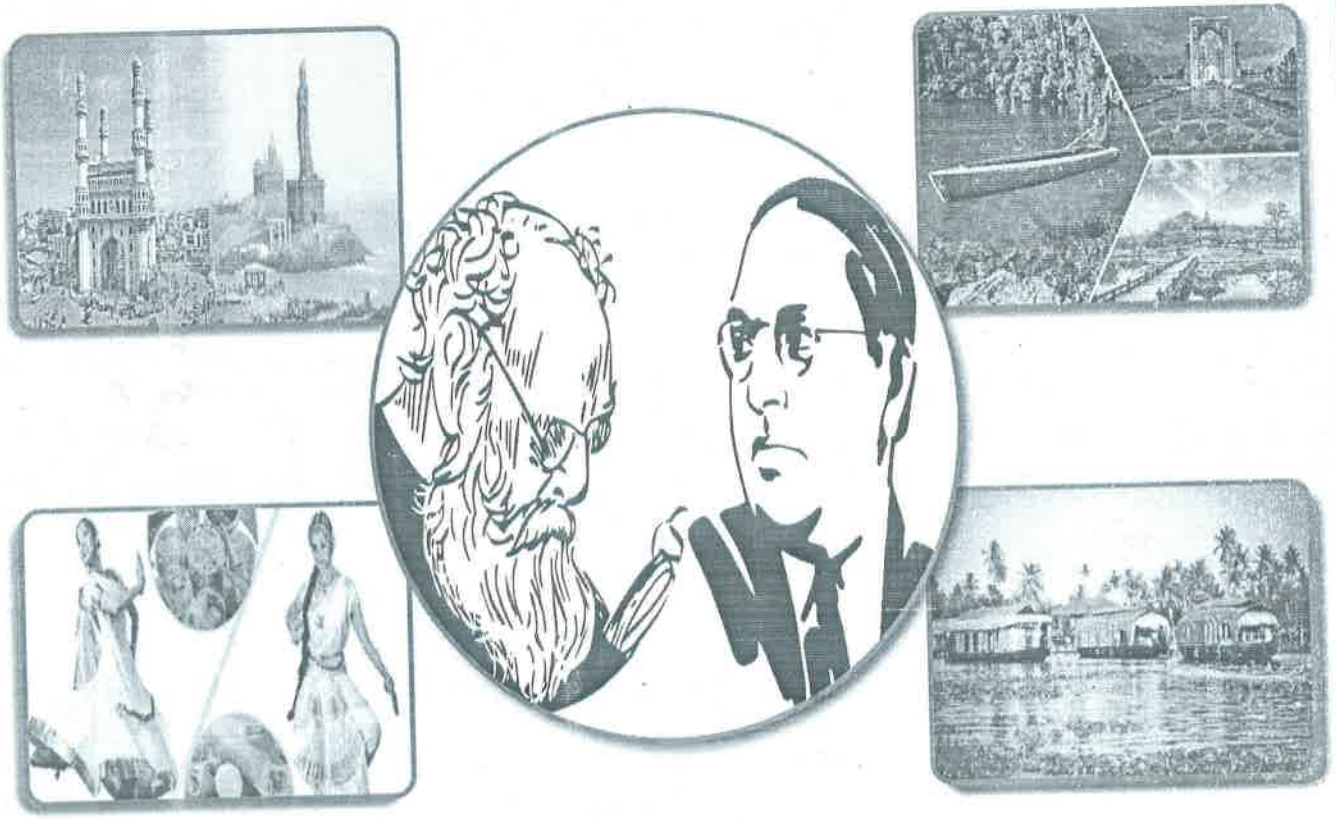

प्राचार्य
महाविद्यालय
राज.

समन्वयक
Coordinator
IQAC CELL
राजकीय ... Rajgarh (Alwar) Raj.

नागफनी

A Peer Reviewed Refereed Journal

(अस्मिता, चेतना और स्वाभिमान जगाने वाला साहित्य)

त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका

* वर्ष 10 * अंक 34 * जुलाई–सितंबर 2020

त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका ISSN- 2321-1504 Naagfani RNI No. UTTHIN/2010/34408

संपादक

सपना सोनकर

सह–संपादक

रूपनारायण सोनकर

कार्यकारी संपादक

डॉ. एन.पी. प्रजापति

डॉ. बलिराम धापसे

अतिथि संपादक

प्रो. संजय एल. मादार

सलाहकार मंडल (Peer Review Committee)

डॉ. विष्णु सरवदे, प्रोफेसर, हैदराबाद

डॉ. किशोरी लाल रैगर, प्रोफेसर, जोधपुर

डॉ. दिनेश कुशवाहा, रीवा

डॉ. एन.एस. परमार, बड़ौदा

डॉ. एम.डी.इंगोले, महाराष्ट्र

प्रो. संजय एल मादार, कर्नाटक

डॉ. अलका गड़करी, महाराष्ट्र

मुख्य पृष्ठ कलाकृति-असलम, अताउर रहमान (रहमान)

प्रकाशन/मुद्रण

1. प्रकाशक – रूपनारायण सोनकर की अनुमति से डॉ. एन.पी. प्रजापति एवं डॉ. बलिराम धापसे द्वारा रोमी प्रेस बैढ़न (डी.जे. कोर्ट) के पास सिंगरौली में प्रकाशन एवं मुद्रण कार्य।

संपादकीय/व्यवस्थापकीय कार्यालय

1. दून व्यू कांटेज स्प्रिंग रोड, मंसूरी – 248179, उत्तराखण्ड दूरभाष–0135–6457809 मो0: 09410778718

शाखा कार्यालय

2. पी.डब्ल्यू डी आर–62 ए. ब्लाक कालोनी बैढ़न, जिला–सिंगरौली म.प्र. 486886, मो0: 09752998467

सहयोग राशि–50/–रुपये पंचवार्षिक सदस्यता–शुल्क–1000/–रुपये संस्था और पुस्तकालयों के लिए 1250/–रुपये विदेशों में – 50/–डालर आजीवन व्यक्ति – 5000, संस्था–7000

नोट:– पत्रिका की किसी भी सामग्री का उपयोग करने से पहले संपादक की अनुमति लेना आवश्यक है। संपादन संचालक पूर्णतयः अवैतनिक एवं अव्यवसायिक है। 'नागफनी' में प्रकाशित शोध–पत्र एवं लेख, लेखकों के विचार उनके स्वयं के हैं, जिनमें संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं। "नागफनी" से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे। अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है। सारे भुगतान मनी आर्डर/चैक/बैंक ट्रांसफर/ई–पेमेन्ट आदि से किये जा सकते हैं। देहरादून से बाहर के चैक में बैंक कमीशन 50/– अतिरिक्त जोड़ दें।

अनुक्रम

संपादकीय	पृष्ठ क्र. से त
दक्षिण भारत में हिन्दी साहित्य – प्रोफेसर संजय एल. मादार	1–3
समस्या मूलक साहित्य	
21वीं शताब्दी का समाज : जाति से जाति तक – डॉक्टर ईश्वर पवार	4–7
भारतीय समाज में शिक्षा : आज और कल –डॉ. शर्मिला	8–11
इक्कीसवीं सदी के किसानों की मार्मिक दास्तान– बाजार में रामधन – डॉ. बबन चौरे	12–14
प्रवासी श्रमिकों की समस्याएं : राष्ट्रीय परिदृश्य – कर्नल प्रवीण शंकर त्रिपाठी	15–17
भारतीय समाज और नारी जीवन – डॉ. रीना शर्मा	18–19
हाशिए का समाज, उद्यमिता और आर्थिक न्याय – डॉ. इरिन कुमार बेक	20–28
विभिन्न विमर्श	
डिजिटल शिक्षा और भाषाविमर्श – डॉ. शिवशरण कौशिक	29–32
जाति और वर्ग के घेरे में कैद 'अपने-अपने पिंजरे' – अशोक पाटील, डॉ. सचिन कदम	33–36
अनवर सुहैल की कहानियों में स्त्री संवेदना – कृष्णा डी. लमाणि	37–39
स्त्री विमर्श : तुम्हे बदलना ही होगा, उपन्यास के परिप्रेक्ष्य में – किल्मा ऐ.के.	40–51
हिन्दी उपन्यास में तृतीय पंथ : एक दृष्टिक्षेप – डॉ. वसंत माळी, डॉ. सरला दवंडे	52–55
'अपवित्र आख्यान' उपन्यास में धार्मिक परिवेश – शाफिया फरहिन	56–61
समकालीन हिन्दी साहित्य में स्त्री विमर्श – हरिजन प्रकाश यमनप्पा	62–64
आधुनिक हिंदी साहित्य के आलोक में दलित विमर्श – श्री बाबूलाल सिंह अयाम	65–71
आलेख	
जायसी का विरह–वर्णन – डॉ. अनिल कुमारी	72–75
हिन्दी भाषा और विविध बोलियाँ – डॉ. अजीत कुमार राय	76–78
प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानन्दन पंत की कविताओं का विशलेषण – डॉ. धन्या के.एम.	79–81
ममता कालिया के उपन्यासों में चित्रित प्रमुख पात्रों का विवेचन – सुजाता	82–83
कबीर की समाज के प्रति मानवीय संवेदना और सहानुभूति – डॉ. माया पारस	84–87
आत्मनिर्भर भारत हेतु सामाजिक पुनर्रचना में साहित्य की भूमिका – श्रीमती वर्षा दिगंबर असोरे	88–89
भारतीय समाज और कामकाजी महिलाएं–एक अवलोकन – डॉ. ईभारानी सिंह पठानियां	90–94
कविताएँ	
'उजाले में आजानुबाहु' – डॉ. दिनेश कुशवाह	95–99
ये कैसी बिमारी है – डॉ. अनिल कुमारी	100
साहित्य समीक्षा	
प्रेमचंद के कफन से रूपनारायण सोनकर की कफन बेहतर है – प्रो. ओम राज	101–1[illegible]
प्रेमचंद बनाम रुपनारायण सोनकर – दूध का दाम – डॉ. एम.डी. इंगोले	105–1[illegible]
अमरकांत की कहानियों में वर्ग संघर्ष – लोकेश	109–11[illegible]

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
IQAC
Govt. P.G. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

ISSN- 2321-1504 Nagfani RNI No. UTTHIN/2010/34408

डिजिटल शिक्षा और भाषा विमर्श

डॉ. शिवशरण कौशिक
संपर्क :–बी– 34सूर्यनगर,तारों की कूँट,टोंकरोड,जयपुर
ईमेल–drssk64@gmail-com मो. 9887098640

भाषा एक सामाजिक वस्तु है तथा इसी के माध्यम से सारे सामाजिक व्यवहार संपन्न होते हैं। मनुष्य के जीवन से जुड़ा प्रत्येक प्रश्न भाषा का ही प्रश्न है। मनुष्य की बेचौनी, उसके संताप, उसकी एषणाएँ, उसकी आकांक्षाएँ, उसका समर्पण, उसकी कर्मशीलता, उसके ज्ञान तथा उसकी समस्त प्रज्ञा का प्रकटी करण भाषा के ही माध्यम से होता है। मनुष्य ने भाषा के माध्यम से ही इस संसार में उपस्थित भौतिक, काल्पनिक, भावनात्मक या रहस्यात्मक वस्तुओं के सार्थक अस्तित्व की उपस्थिति का अनुभव किया है।

विगत कुछ दशकों से विश्व के अनेक देशों के साथ भारतीय परंपरागत शिक्षा प्रणाली में भी 'डिजिटल शिक्षा' ने तेजी से अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाया है। इंटरनेट, मोबाइल फोन,लैपटॉप, टेबलेट आदि इसके आवश्यक उपकरण हैं। पाठ्य पुस्तकों, ब्लैकबोर्ड, चाक–डस्टर आदि का स्थान अब अत्याधुनिक डिजिटल उपकरणों ने ले लिया है जिनकी स्वयं की भाषा नहीं होती किन्तु उनके सॉफ्टवेयर अर्थात संचालन की वही भाषा होती जहाँ वे निर्मित होते हैं। पीपीटी, वीडियो, ईलर्निंग की विधियाँ, अभ्यास संबंधी डेमो, ऑनलाइन शिक्षण–प्रशिक्षण तथा अन्य डिजिटल पद्धतियों में विद्यार्थी ध्वनियों तथा दृश्यों के माध्यम से सीखने लगा है जिससे उसे नए–नए शब्द सीखने को मिल रहे हैं और उसके भाषा–कौशल तथा शब्दावली में भी तेजी से वृद्धि हो रही है। हिन्दी भारत की अधिसंख्य जनता के व्यवहार की भाषा होने तथा राजभाषा होने के कारण देश की अग्रणी भाषा है। यह न केवल अंतरदेशीय वाणिज्य–व्यापार की भाषा है, बल्कि शिक्षा, कार्यालय, प्रशासन, जनसंचार, कानून, ज्ञान–विज्ञान, तकनीक, प्रौद्योगिकी, कृषि, उद्योग आदि क्षेत्रों में भी उपयोग में लाई जाती है। इसके साथ ही हिन्दी विभिन्न प्रांतों के परस्पर संपर्क भाषाई उद्देश्यों को भी पूरा करती है। इसलिए हिंदी के समक्ष तकनीक के सहारे अपने राष्ट्रीय और वैश्विक उद्देश्यों में सफल होने की चुनौती है।

आज कोरोना महामारी के कारण पूरी दुनिया की शिक्षा व्यवस्था डिजिटल उपकरणों के माध्यम से ई–शिक्षा प्रणाली के एक विकल्प के रूप में उभरी है। यह विकल्प कितना स्थाई होगा, यह तो भविष्य ही बताएगा किन्तु आज जब शिक्षण संस्थाओं में विद्यार्थियों की उपस्थिति ही नहीं हो पा रही है तब यही एकमात्र विकल्प हमारे सामने है। इसलिए डिजिटल शिक्षा प्रणाली ने भाषाओं के अस्तित्व और उनके प्रयोग के महत्व की भी बड़ी चुनौती हमारे सामने रख दी है। इसके लिए आवश्यक है कि जिस भाषा में भी शिक्षण कार्य करवाया जा रहा है उसकी उसी भाषा में श्रेष्ठ और समुचित मात्रा में ई–पाठ्य पुस्तकें उपलब्ध हों। दूसरा उस भाषा के विभिन्न विषयों के प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता हो और इसी के साथ महत्वपूर्ण यह भी है कि उस भाषा में तकनीक का संचालन कुशलता से हो सके। डिजिटल माध्यमों पर अनेक भाषाओं में अनेक विषयों के संदर्भ उपलब्ध हैं, इसलिए आज हम विश्वज्ञान–संपदा के परस्पर विनिमय की ओर बढ़ रहे हैं। इससे भाषाओं के क्रिया–रूप और उनके शब्द भी आपस में मिल जुल रहे हैं।

ऐतिहासिक तथ्य यह है कि कुछ हजार सालों तक दुनिया के ताकतवर देशों के लोग दूसरे और छोटे देशों को अपना उपनिवेश बनाते थे, उन पर शासन करते थे। इसी क्रम में भारत में अरबी–फारसी और अंग्रेजी भाषाओं तथा उनकी ज्ञान–परंपरा का प्रवेश हुआ।

***

प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.
Coordinator
G.राजकीयमहाविद्यालय Rajgarh (Alwar) राजगढ़(अलवर)

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 10, Issue 12, December 2020 Impact Factor 6.569 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

विश्व शांति के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ की अद्यतन की आवश्यकता

पूरनमल मीना
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष
राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीयमहाविद्यालय, राजगढ़अलवर (राजस्थान)

सार

संयुक्त राष्ट्र के बार-बार के संघर्षों और उसके कई उत्तरों की वैधता को इस रणनीतिक अंतर से आंशिक रूप से समझाया जा सकता है। मानवाधिकारों और लोकतांत्रिक शासन को बढ़ावा देना, मानवीय अत्याचारों के पीड़ितों की सुरक्षा, और सामूहिक अपराधों के राज्य अपराधियों की सजा सभी समय के दौरान अधिक प्रचलित हो गए हैं, जबकि अंतर्राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए प्राथमिक खतरे राष्ट्रों के भीतर संकटों के हिंसक विस्फोट से आए हैं। . नागरिक सुरक्षा के लिए सैन्य बलों के उपयोग में स्पष्टता, निरंतरता और विश्वसनीयता की आवश्यकता है क्योंकि सशस्त्र संघर्षों के बदलते चरित्र और संघर्ष से अत्यधिक मौतों के साथ सैनिकों से नागरिकों के हताहतों की संख्या में परिणामी बदलाव- संबंधित रोग और कुपोषण प्राथमिक परिणाम के रूप में। एक शांति स्थापना संगठन के रूप में संयुक्त राष्ट्र की वैधता का दिल धड़क रहा है।

संकेत शब्द:विश्व शांति, संयुक्त राष्ट्र संघ*

परिचय

संयुक्त राष्ट्र के चार्टर की प्रस्तावना में लिखा है, "हम, संयुक्त राष्ट्र के लोग आने वाली पीढ़ियों को युद्ध की विभीषिका से बचाने के लिए संकल्पित हैं, ... और मानव व्यक्ति की गरिमा और मूल्य में मौलिक मानवाधिकारों में विश्वास की पुष्टि करने के लिए, पुरुषों और महिलाओं और बड़े और छोटे राष्ट्रों के **समान अधिकारों में और उन** स्थितियों को स्थापित करने के लिए जिनके तहत संधियों और अंतरराष्ट्रीय कानून के अन्य स्रोतों से उत्पन्न होने वाले दायित्वों के

Coordinator IQ AC-CELL Govt. P. G. College Rajgarh (Alwar) Raj.
Principal Govt. P. G. College Rajgarh (Alwar) Raj.

International Journal of Botany Studies

Indexed Journal, Refereed Journal, Peer Reviewed Journal

ISSN: 2455-541X, Impact Factor: RJIF 5.12

Publication Certificate

This certificate confirms that **"Rashmi Kundra"** has published article titled **"Phytochemical analysis of stem-bark of the selected trees by biochemical and GC-MS methods "**.

Details of Published Article as follow:

Volume	:	**6**
Issue	:	**4**
Year	:	**2021**
Page Number	:	**84-93**
Certificate No.	:	**6-3-187**
Date	:	**8-07-2021**

Regards
International Journal of Botany Studies
www.botanyjournals.com
Email: botany.article@gmail.com

Coordinator

wjpls, 2021, Vol. 7, Issue 7, 70 – 77. Review Article ISSN 2454-2229

World Journal of Pharmaceutical and Life Sciences
WJPLS
www.wjpls.org
SJIF Impact Factor: 6.129

AN OVERVIEW ON PROMISING PHARMACOLOGICAL AND BIOLOGICAL ASSETS OF NATURAL HIMALAYAN VIAGRA (CORDYCEPS SINENSIS)

Rajesh K. Yadav[1], Ashok K. Kakodia[2], Atul Tiwari[3], Lakha Ram[4], Lakshya Chaudhary[5] and Raaz K. Maheshwari[6]*

[1]Department of Zoology, SS Jain Subodh PG College, Jaipur, Rajasthan.
[2]Department of Zoology, SGG Govt PG College, Banswara, Rajasthan.
[3]Department of Botany, Dr BR Ambedkar University, Agra, UP.
[4]Department of Chemistry, JNMP Govt PG College Phalodi, Jodhpur Rajasthan.
[5]Department of Biotechnology, Dr BR Ambedkar University, Agra, UP.
[6]Department of Chemistry, SBRM Govt PG College, Nagaur, Rajasthan.

***Corresponding Author: Raaz K. Maheshwari**
Department of Chemistry, SBRM Govt PG College, Nagaur, Rajasthan.

Article Received on 25/04/2021 **Article Revised on 14/05/2021** **Article Accepted on 04/06/2021**

ABSTRACT

Cordyceps, a caterpillar fungus is found to be used as high medicinal value by the people around the world. It is a highly valued aphrodisiac commonly known as "Himalayan Viagra". *Cordyceps* spp. genus compromises a plethora of compounds and some of them showed therapeutic and pharmacological activities. Yarsagumba is known to science as *Ophiocordyceps sinensis* The taste is of mushroom, flavoursome, sweet and neutral in nature. It can be eaten plain or powdered, mixed with milk or water. It is considered to have high medicinal value and used to treat diseases like cancer, diabetes, pulmonary diseases cardiovascular disorder, sexual dysfunction, renal disease and many other diseases for centuries in Chinese Traditional Medicine and Bhutanese Indigenous Medicine. The present study reviews about its basic knowledge, about the properties of *Cordyceps* species along with ethnopharmacological properties, application in food, chemical compounds, and various pharmacological properties with a special focus on various medicinal uses, phytochemical and pharmacological studies conducted so far.

KEYWORDS: *Yarshagumba; Therapeutic;* Cordycepin; Polysaccharide and exopolysaccharide; Myriocin; *Immunity; Socio- Economic Status.*

INTRODUCTION

Himalayan Viagra has been used for about 1000 years as an aphrodisiac or as a treatment for hyposexuality. Yarsagumba the world's most expensive medicinal fungus, at least 700 species are known. The fungus is found in the Tibetan Plateau and in regions like Gansu, Qinghai, Sichuan, Yunnan, Bhutan, India, and Nepal, as well as across the southern flank of the Himalayas. The peculiar life cycle of the fungus has also earned it the names 'winter worm, summer grass' and 'caterpillar fungus'. Cordyceps is a type of medicinal mushroom said to offer antioxidant and anti-inflammatory benefits. The fungus *Cordyceps* spp. belongs to Tibetan medicine and consumers describe it as an important source of energy. The word *Cordyceps* originates from the Greek term "kordyle", which means "club", and the Latin etymon "ceps", which means "head" (Olatunji et al., 2018). The caterpillar fungus Ophiocordyceps sinensis is a medicinal mushroom increasingly used as a dietary supplement for various health conditions, including fatigue, chronic inflammation, and male impotence. (Martel, J. et al 2017). In Chinese, it is called *Dong cong xia cao*. However, the origins are Tibetan: *Yart Swa Gun Bu*, which means *'herb in the summer and insect in the winter'*. The fungus is also known as Keera jari in Uttarakhand because of its caterpillar-like appearance. Keerajari, the caterpillar fungus is an exotic species and known as Himalayan Viagra of Indian Viagra for its libido boosting power. The fungus cordyceps (*Cordyceps sinensis*, Ophiocordycipitaceae) has been known as an effective tonic and aphrodisiac in Traditional Chinese Medicine (TCM) and is increasingly used in China as a popular dietary supplement and/or medicine.. Before the rainy season, the fungus infects caterpillar larvae living in the grassy soil. When it finally attacks the head, the larvae die. The stalks of the fungus then propagate in the head, growing 2-3 inches long and becoming brown in colour. A parasitic fungus that grows inside the ghost moth caterpillar and then kills its host by bursting

LUPINE PUBLISHERS

Open Access Journal of Complementary & Alternative Medicine

DOI: 10.32474/OAJCAM.2021.03.000168

ISSN: 2644-1217

Mini Review Article

Artificial Intelligence and Its Impact on Healthcare

Ms. Kanishka Sharma[1], **Dr. Swati Singh**[2], Dr. Kamud Tanwar[3] and Dr. Ashok Kakodia[4]

[1]*Student M. Sc Chemistry (Sem IV), Department of Chemistry, Kanoria PG Mahila Mahavidyalaya, jaipur(rajasthan) India*

[2]*Assistant Professor, Department of Chemistry, Kanoria PG Mahila Mahavidyalaya, jaipur(rajasthan) India*

[3]*Associate Professor, Department of Chemistry, Kanoria PG Mahila Mahavidyalaya, jaipur(rajasthan) India*

[4]*Director Research, Govind Guru Tribal University, jaipur(rajasthan) India*

***Corresponding author**: Dr. Swati Singh, Assistant Professor, Department of Chemistry, Kanoria P.G Mahila Mahavidyalaya, India

Received: October 02, 2021

Published: October 26, 2021

Abstract

Artificial Intelligence (AI) is globally emerging as a logistic tool in digital technology and depicts its wide range of relevance in preventive medicine and its management. Smart Hospitals or Hospital 4.0 is a basic need for today's scenario seeking to COVID 19. [1] Coronavirus has become epidemic and claim for imperative medical supplies, medicines along with the synthesis of neutralizing antibodies which can block the virus particles. Industrial Internet of things (IIoT) known as the fourth industrial revolution served to be at rest during COVID-19 crunch. IIoT has assassinated the demands of individualized face conceal, mitten and enabled to conduct all relevant research and assisted to provide the data immediately for the treatment of COVID-19 patients. Effective upturn off wearables and sensors (like Apple Watch, MI Band) has export a new generation of telemedicine, where patients could be cared virtually by hospital staff. The employment of these technologies would help people to get [2] enlighten regarding their wellbeing. These smart manufacturing technologies could provide a lot of resourceful brainstorm band-aid to scuffle geographical and global medical emergencies.

The aim of chapter is to through light on the smart system of Industry 4.0 during this pandemic of COVID 19 by providing better digital techniques without imposing the risks to [3] healthcare. This paper overall deals with how AI and Industry 4.0 co-jointly can change the whole scenario of our medical procedures as well as healthcare systems and in addition to that many technologies which are currently helping in the medical field are also being discussed.

keywords: Coronavirus, wearables, sensors, Industry 4.0

Artificial Intelligence: An Overview

Artificial Intelligence refers to machine learning, i.e. intelligence and machinery are computed. Basically, machines [4] showing human intelligence depicts artificial intelligence but in addition to it the machine should behave humanly in every possible way i.e action, reaction, and thinking. AI research objectives includes reasoning, representation, planning, realization and manipulation of objects.

Artificial intelligence term is used to describe the use of technology with intimation of machines and human intellect which are programmed in such a way that they imitate and stimulate human [5] actions. AI is a technology based on hi-tech robotics, science fiction and can seem stimulating to some. Over past 50 years, this field has grown appreciably but the major force which tends to pull it towards a brighter spot is the fourth industrial revolution. AI in many forms appears in wide range of technologies starting from today's most preferable and basic need smartphones to every possible corner to make the processing of the work easy and convenient for everyone.

Artificial intelligence is basically related to every field, or we can say it touches every corner and hence it pursues better devices and [6] improvements to every field including medical field. AI employs computer skills to perform clinical diagnoses, treat and predict the results. AI provides strong relevance to healthcare in those fields where there is lack of trained staffs and people die due to lack of resources. In today's era, AI is a broad field and can provide a developed and better future related to healthcare1.

Applications of AI on healthcare sector and impact on industry 4.0:

Artificial intelligence has benefitted a large number of industrial sectors including healthcare. It is becoming productive for doctors, patients and administrators. Some of the applications of AI realm are listed below:

Copyright © All rights are reserved by Dr. Swati Singh

ASIAN JOURNAL OF PHARMACEUTICAL AND CLINICAL RESEARCH

ACADEMIC SCIENCES
Knowledge to Innovation

Vol 14, Issue 8, 2021

Online - 2455-3891
Print - 0974-2441

Research Article

INTERACTION OF 3-HYDROXY PYRIDINE AND SURFACTANT MICELLES: A FLUORESCENCE STUDIES

ANSHU MAHLAWAT*, ARUN GOYAL

Department of Chemistry, Government P.G. College Rajgarh, Alwar, Rajasthan, India. Email: anshumahlawat19@gmail.com

Received: 25 April 2021, Revised and Accepted: 07 June 2021

ABSTRACT

Objective: Micellar solubilization is a powerful alternative for dissolving hydrophobic compound in aqueous environment. 3-hydroxy pyridine (3-HP) derivatives are the potential endogenous photosensitizers. 3-HP derivatives show protective effect in clinical extreme condition such as hypoxia, hyperthermia, hypokinesia. Micellization of 3-HP followed by solubilization would catalyze its pharmaceutical activities which may serve better results in medicinal and analytical fields.

Methods: Fluorescence and absorption spectroscopy techniques are used to monitor the micellar solubilization studies of 3-HP. Solubilization studies of 3-HP with various anionic, cationic and nonionic surfactants have been performed in aqueous medium around 23–25°C temperature. The solubilization action of the surfactant has also been determined by theoretical calculated spectral parameters such as empirical fluorescence coefficient, quantum yield, stokes, shift and molar absorption coefficient.

Results: 3-HP shows fluorescence excitation peak at 315 nm and emission peak at 390 nm respectively while the absorbance of 3-HP has been found to be maximum at 305 nm. The fluorescence as well as the theoretically calculated spectral data has been used to characterize the solubilized environment of the micelles in terms of their polarity, probe solubilization site and critical micelle concentration.

Conclusion: This article briefly discusses the importance of surfactants in biological system model as well as the use of micelles in pharmacy as an important tool that finds numerous applications.

Keywords: 3-hydroxy pyridine, Fluorescence, Micelles, Solubilization.

© 2021 The Authors. Published by Innovare Academic Sciences Pvt Ltd. This is an open access article under the CC BY license (http://creativecommons.org/licenses/by/4.0/) DOI: http://dx.doi.org/10.22159/ajpcr.2021v14i8.41895. Journal homepage: https://innovareacademics.in/journals/index.php/ajpcr

INTRODUCTION

Fluorescence spectroscopy is a well-established extensively used research and analytical tool in many disciplines [1]. Fluorescence spectroscopy can also serve as fantastic tool to study the micellization of surfactants due to its excellent sensitivity towards the environment surrounding the fluorophore which exhibits different fluorescence characteristics depending on the properties of the solubilizing medium. In recent years, a remarkable growth in the use of fluorescence in food analysis, biotechnology, drug delivery and design and clinical diagnostics of disease have been observed and several reports are given on its applications [2-6].

Micellization is an important phenomenon not only because a number of important interfacial phenomena, such as detergency and solubilization, depend on the existence of micelles in solution but also because it affects other interfacial phenomena, such as surface or interfacial tension reduction, that do not directly involve micelles. Micelles have been the subject to the numerous investigations due to their importance as model system for mimicking bio-membranes [7-9]. Many characteristics of molecules, for example, absorption and fluorescence spectra, deprotonation and protonation equilibrium etc. are changed drastically in micellar media [10-13]. Conversely, changes observed in the absorption spectra of molecules have been utilized to study the properties of micelles, such as critical micelle concentration (CMC), viscosity, polarity of different sites [14]. Micelles also involve in drug delivery, to minimize drug degradation and loss, to prevent harmful side effects, and to increase drug bioavailability.

^{13}C and ^{1}H NMR spectra of 3-hydroxy pyridine (3-HP) and its derivatives were analyzed [15]. The protective effect of 3-HP derivatives in various extreme conditions such as hypoxia, hypothermia, and hypokinesia have been investigated [16]. Koval'chukova et al. [17] studied the physicochemical properties of some complex compounds of 3-HP and transition metals. Bromido and Chlorido complexes of Cu with 3-HP were prepared and the magnetic properties of complexes were analyzed by the infrared, ultraviolet/visible and electron paramagnetic resonance spectra [18]. Bridges et al. [19] were investigated that 2 and 4-HP were non-fluorescent at all pH values while 3-HP were fluorescent and studied the variations of the excitation and fluorescence wavelength and fluorescence intensity at different pH values. The anticancer properties of 3-HP and platinum complexes were studied and their activity against ovarian cancer cell lines have been determined [20].

METHODS

Analytically pure 3-HP used was a Loba sample. The following surfactants were employed; (a) Nonionic: (i) TX-100: Polyoxyethylene tert-octyl phenyl ether, (ii) Tween-80: Polyoxyethylene sorbitan monooleate, (iii) Tween-20: Polyoxyethylene sorbitan monolaurate. (b) Anionic: (i) SLS: Sodium Lauryl sulphate, (ii) SDBS: Dodecylbenzyl sodium sulphonate, (iii) DSSS: Dioctyl sodium sulphosuccinate. (c) Cationic: (i) CPC: Cetylpyridinium chloride, (ii) CTAB: Cetyltrimethyl ammonium bromide, (iii) MTAB: Myristyl trimethyl ammonium bromide. All the surfactants used were either of Sigma (USA) or BDH (UK) products. The stock solution of 3-HP was prepared in double distilled water. All the experiments were performed around 23–25°C in aqueous medium keeping the final concentration of 3-HP at $6*10^{-5}$M for fluorescence studies. For absorption studies the concentration of 3-HP was kept at $2*10^{-4}$M throughout the experiments.

All the fluorimetric experiments were carried out on Perkin Elmer Fluorescence Spectrophotometer (Model no. 204) with a synchronized strip chart recorder (Model no. 056). A Xenon lamp was used as a light

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

समन्वयक
Coordinator
आई.क्यू.ए.सी.
IQAC CELL
Govt. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

Scanned with CamScanner

source. For recording the fluorescence excitation and emission spectra, its slit width was kept at 10 nm and a cell of 1 cm path length was used

ABEER

July-September 2020

I.S.S.N. No. 2249-3409

R.N.I. No. RAJBIL/36886/2011

Quarterly Journal

Editorial office

A-37, Malviya Nagar,

Jaipur-302017

E-mail : abeerresearch17@gmail.com

The facts and view in the Article / Research papers etc are of the authors and will be totally responsible for the authenticity, validity and originality etc of the Article and Research papers.

Coordinator समन्वयक
IQAC-CELL
Govt. राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय Rajgarh (Alwar) Raj.

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

CONTENTS

1.	मीणा जनजाति में राजनीतिक जागृति के सूत्रधार (बीसवीं शताब्दी के सन्दर्भ में)	नीतेश मीणा	1–22
2.	जगदीश सिंह गहलोत के इतिहास लेखन की विशेषताएँ	कृष्णा खींची	23–37
3.	हिन्दी भाषा के प्रति बी.एड शिक्षक विद्यार्थियों का ज्ञान, मनोवृत्ति एवं अभ्यास (राजस्थान के संदर्भ में)	बाबूलाल मेहरा डॉ. जी.एल. मेनारिया	38–50
4.	आयुर्वेद के आचार्य और उनका काल	पुष्पेन्द्र चतुर्वेदी	51–69
5.	राजस्थान के आदिवासियों के लोकगीतों में नारी विमर्श	जया दूबे	70–87
6.	कृषि का आधुनिकीकरण : दौसा जिले के सन्दर्भ में	सीताराम मीणा	88–96
7.	गांधी की समाजवादी विचारधारा का आधुनिक संदर्भो में मूल्यांकन	राकेश कुमार मारोटिया	97–104
8.	भारत में चीनी निवेश : वर्ष 2019–20 के विशेष संदर्भ में	अशोक मीना	105–111
9.	गांधी चिन्तन मे नई तालिम	डॉ प्रवेश कुमार	112–119
10.	Themes of the Fictional World of Toni Morrison	Dr. Priya Jain	120–129
11.	Parliamentary Privilege: AnInteractive Approach (With Special reference to India)	Suman Godara	130–137

Coordinator
IQAC-CELL
Govt. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Created by Universal Document Converter

Pankaj Nagar

2 minutes ago

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 7.891 (IIJIF) | Printing Area® Peer-Reviewed International Journal | August 2021 Issue-79, Vol-03 | 09

41) सामाजिक क्रांति के अग्रदूत – छत्रपति शाहूजी महाराज और संतोष का
पंकज कुमार नागर & डॉ. शिव शरण कौशिक, राजगढ़ अलवर (राजस्थान) ||179

42) स्नातव्याकरणिकशिक्षा–आर्येषु संस्कृतशिक्षाधिकार
पलाश मण्डलः, तिरुपतिः ||182

43) मध्यप्रदेश के आदिवासियों की शैक्षणिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन
श्रीमती रीना दोहरे & प्रो. संजय कुलश्रेष्ठ, ग्वालियर (म.प्र.) ||185

44) मेहरुन्निसा परवेज की कहानियों में शिल्प
डॉ. आलोक कुमार सिंह, अयोध्या (उ.प्र.) ||191

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Coordinator
IQAC-CELL
Rajgarh (Alwar Raj.)

प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर)

Pankaj Nagar
2 minutes ago

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 7.891(IIJIF) | Printing Area® Peer-Reviewed International Journal | August 2021 Issue-79, Vol-03 | 0179

41

सामाजिक प्रगति के अग्रदूत – छत्रपति शाहूजी महाराज और संजीव का उपन्यास प्रत्यंचा

पंकज कुमार नागर
शोधार्थी, हिंदी विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

डॉ. शिव शरण कौशिक
शोध निर्देशक, सह–आचार्य, हिंदी विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, राजगढ़ अलवर
(राजस्थान)

****

साहित्य मे उपन्यास गद्य की वह विधा है जिसमे विषय के प्रकटीकरण की अपरिमित सम्भावनाए होती है। इसका फलक विराट होता है जिसमे इतिहास, मिथक, साहित्य, समाज, मूल्यबोध, युगबोध और समकालीन स्थितियों व घटनाओं को एक मंच पर उपस्थित करने क्षमता है। उपन्यास के इस विराट फलक का सार्थक उपयोग कथाकार संजीव ने अपने उपन्यासों मे किया है। संजीव ने धार, सूत्रधार, सावधान! नीचे आग है, जंगल जहाँ शुरू होता है, रह गई दिशाएं इसी पार, अहेर, फाँस जैसे लीक से हटकर उपन्यास रचे है। उनके उपन्यासों में सामाजिक–आर्थिक–राजनीतिक न्याय का पुरजोर आग्रह मौजूद है। वे उत्तर आधुनिकता के प्रभावों, नव साम्राज्यवाद, भूमंडलीकरण, भ्रष्ट शासन–प्रशासन, सामाजिक समस्याओं को उपन्यास के ताने–बाने मे कुशलता से बुनते है। मैनेजर पाण्डेय संजीव के लेखन की विशेषता हेतु कहते है– "संजीव हर तरह के अन्याय, अत्याचार तथा अतिचार के विरोधी है और अग्रगामी, न्यायसंगत तथा मानवीय दृष्टिकोण के पक्षधर।"[1]

प्रत्यंचा संजीव का नवीनतम उपन्यास है जिसमें कोल्हापुर रियासत के छत्रपति शाहूजी महाराज (१८७४–१९२२) की जीवनगाथा है। १८१२ की सहायक संधि के परिणामस्वरूप कोल्हापुर के प्रशासक अंग्रेज थे। शाहूजी ने सीमित अधिकारों और धन के बावजूद सामाजिक न्याय हेतु अभूतपूर्व कार्य किये। अपने राज्य में निचली जातियो और स्त्रियों को प्रशासनिक पदों पर नियुक्ति दी। बालकों की प्राथमिक शिक्षा का प्रबंध किया। उनके लिए बोर्डिंग हाउस और छात्रावासों की स्थापना की। स्त्री शिक्षा हेतु पृथक विभाग बनाया। संजीव लिखते है– "राजनीतिक गुलामी से भी बदतर होती है सामाजिक गुलामी।"[2] शाहू जी यदि चाहते तो अन्य रियासतों के राजाओं की तरह प्रिवीपर्स के आधार पर राजसी ऐश्वर्य का सुख भोग सकते थे, परन्तु उन्होंने संघर्ष का मार्ग चुना। छत्रपति शाहूजी के जीवनीकार डॉ. विजय कुमार त्रिशरण ने लिखा है– "सम्राट अशोक के बाद छत्रपति शाहूजी महाराज एक ऐसे राजा थे जिन्होंने विषमता पर आधारित हिन्दू समाज को चुनौती दी तथा दलित–बहुजनों के उद्धार एवं उत्थान के लिये ब्राह्मणवादी अवरोधों के बावजूद निर्भीकतापूर्ण जीवन पर्यन्त कार्य किया।"[3] शाहूजी महाराज ने सामाजिक समानता की प्राप्ति हेतु अभूतपूर्व कार्य किये।

तत्कालीन कोल्हापुर के प्रशासन में मुख्य भागीदारी ब्राह्मणों, अंग्रेजों, पारसियों और प्रभुओं की थी। शाहूजी ने नौकरियों का सर्वे करवाकर उनमें अन्य जातियों हेतु आरक्षण का प्रावधान किया। "सन् १९०२ में शाहूजी महाराज ने पिछड़े और दलितों को अपनी रियासत में आरक्षण दिया था। हमें आरक्षण का मतलब यहाँ समझ लेना चाहिए कि यह एक ऐसी व्यवस्था है, जिसके द्वारा समय–समय पर कुछ खास सुविधाएं या अधिकार दिये जाते है, जिससे उन्हें न्याय मिले या शासन चलाने में ऐसा करना जरूरी हो।"[4] शाहूजी का तर्क था कि समाज के वंचित वर्गों को भी विकास के अवसर उपलब्ध कराए जायें।

अकाल व सूखे की समस्या से निपटने हेतु सरकारी दर पर अनाज के विक्रय की व्यवस्था की। निराश्रितों हेतु आश्रमों की स्थापना की जिनमें मुफ्त भोजन, आवास, वस्त्र और दवा का प्रबन्ध किया। ऐसा

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर

Coordinator
IQAC-CELL
(Alwar) Rajasthan

ISSN 2581- 4133

वर्ष : 13 • अंक : 11 • पृष्ठ : 44 • जयपुर
www.shaikshikmanthan.com

ज्येष्ठ, विक्रम संवत् 2078
1 जून 2021 • ₹ 25/-

शैक्षिक मंथन

शैक्षिक क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

1. सदस्य - संपादक मंडल

2.

Coordinator
IQAC CELL

जल प्रबन्धन और शिक्षा

जल-सृष्टि और विज्ञान

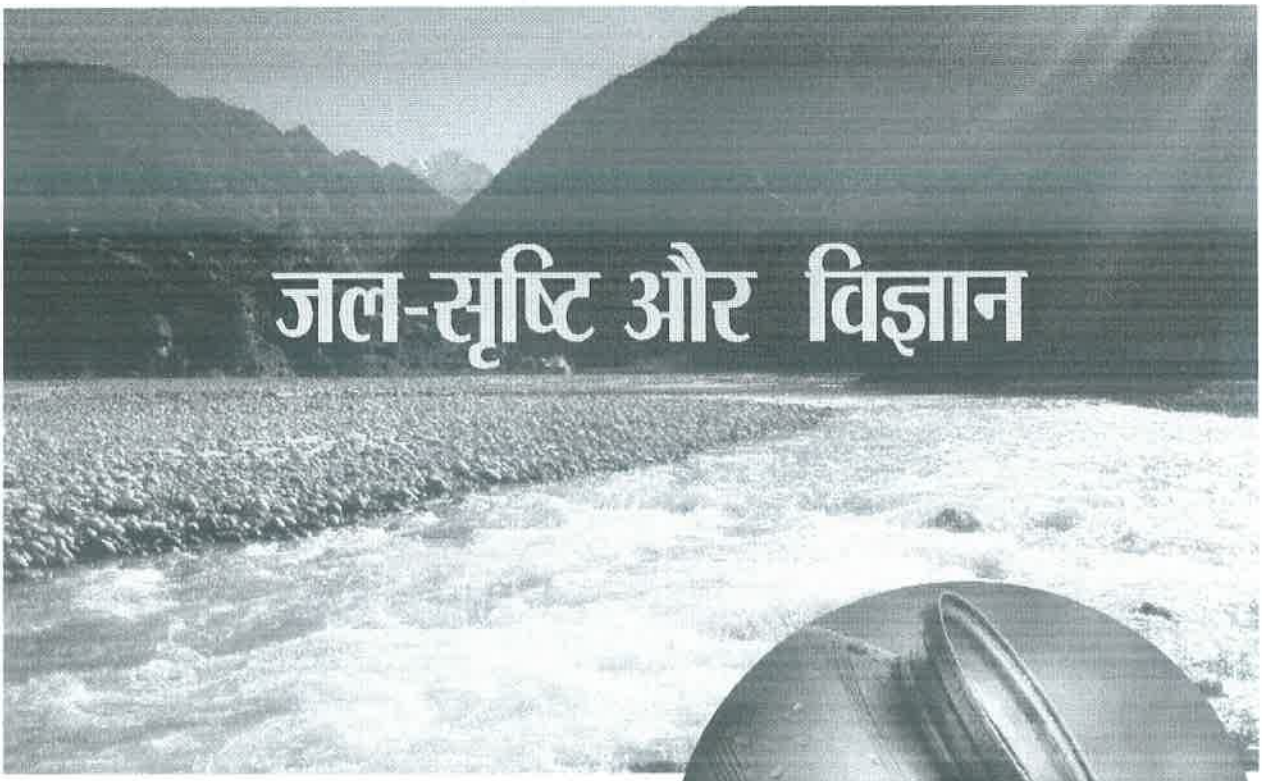

डॉ. शिव शरण कौशिक

एसोसिएट प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय,
राजगढ़, अलवर (राज.)

इस समूचे विश्व का तीन चौथाई भाग जल से ढका हुआ है। यह कोई नया तथ्य नहीं है, हम सब इसे भली-भांति जानते हैं। जल के भी यहाँ अनेक रूपाकार हैं जिन्हें हम नदी, सरोवर, तालाब, जोहड़, जलाशय, कुआँ, बावड़ी, टांका, नलकूप, नहर और वर्तमान में बोरिंग अथवा एनीकट इत्यादि के नाम से जानते हैं। रासायनिक दृष्टि से भी पानी, गैस, वाष्प, बर्फ आदि जल के ही प्रकार हैं। संसार की प्रत्येक वस्तु, प्राणी, वनस्पति आदि के निर्माण में तथा जीवन में जल की ही महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। पंचमहाभूतों में वायु के अतिरिक्त सर्वथा अधिक प्राणदायी भी जल ही है। यह सर्वविदित है कि मानव शरीर का निर्माण भी पंचमहाभूतों से मिलकर हुआ है और जल इसका महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। तन की पुष्टि, तुष्टि, क्षुधा आदि प्रवृत्तियाँ तभी जाग्रत होती हैं जब जल का उचित अनुपात कोशिकाओं में सम्पुष्ट हो जाता है।

इस विश्लेषण का उद्देश्य यहाँ केवल यही बताना है कि जल है तो जीवन है, जल है तो सृष्टि है। हाँ, कभी-कभी यही जल सृष्टि के विनाश का कारण भी बनता है जिसके अनेक प्राकृतिक, भौगोलिक तथा सामाजिक कारण हो सकते हैं। यह विनाश बादल फटने, बाढ़ आने जैसी घटनाओं में हम देखा ही करते हैं। महाकवि जयशंकर प्रसाद की कालजयी कृति 'कामायनी' का प्रारंभ जल प्रलय से ही होता है। ''हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर बैठ शिला की शीतल छांह, एक मनुज भीगे नयनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह। नीचे जल था ऊपर हिम था, एक तरल था एक सघन, एक तत्त्व की ही प्रधानता कहो उसे जड़ या चेतन।'' जब देव संस्कृति उपभोक्तावाद के अतिचार में डूब जाती है तो प्रकृति सर्वनाश से दंड का विधान रचती है। जल, प्रलय में बदल जाता है। सृष्टि का पुनः सृजन होता है और मानव सभ्यता का विकास हो पाता है। यह कहने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि जल के इर्द-गिर्द ही मानव संस्कृति का उद्भव एवं विकास होता है, ऐसी वैज्ञानिक मान्यता भी है।

जल के माध्यम से किसी अराजक व्यक्ति के विनाश के शाप आदि की भी अनेक घटनाएँ हमारे शास्त्रों में, कथाओं में विद्यमान हैं जिनके माध्यम से सामाजिक मर्यादाओं तथा जीवन-मूल्यों की स्थापना और रक्षा की जाती रही है। प्राय: कथाओं में हमने सुना ही है कि किसी तपस्वी या ऋषि ने हाथ में जल लेकर किसी मंत्रोच्चार के साथ अमर्यादित आचरण करने वाले आततायी व्यक्ति, राजा, राक्षस

प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर)
Coordinator
IQAC CELL
Govt. College, Rajgarh (Alwar)

ISSN 2278 - 0327

विषय-सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	गांधी जी के आत्मनिर्भरता के आदर्श की वर्तमान प्रासंगिकता	डॉ. सुभाष चन्द्र [illegible] 'चौधरी' डॉ. संजय कुमार	05
2.	प्रकृति कवि कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तल में परिस्थिति विज्ञान	डॉ. अक्षय कुमार मिश्र	09
3.	शतपथब्राह्मण में 'पुरुष' का स्वरूप- 'पुरुषो वै यज्ञः'	डॉ. रेनू कोछड़ शर्मा	14
4.	संस्कृत साहित्य में मानव के समग्र विकास में सहायक जीवन मूल्य	डॉ. मोना शर्मा	19
5.	श्री गुरु तेगबहादुर साहिब : सांस्कृतिक चेतना के आधार-स्तम्भ	डॉ. विनोद कुमार	22
6.	आयुर्वेदिक मानसिक स्वास्थ्य और त्रिगुण सिद्धान्त	डॉ. विजय कुमार [illegible]	25
7.	श्रीमद्भगवद्गीता का दार्शनिक चिन्तन	डॉ. सुमन कुमारी	28
8.	भाग्य परिशीलन	डॉ. अनिल कुमार	32
9.	भूमि परीक्षण की सरल विधियाँ	डॉ. भूपेन्द्र कुमार पाण्डेय	38
10.	वास्तुशास्त्र की मूल-संकल्पना एवं लोकोपकारक सिद्धान्त	डॉ. रविन्द्र प्रसाद [illegible]नियाल	41
11.	कला के क्षेत्र में ज्योतिषशास्त्र का योगदान	डॉ. [illegible] कुमार [illegible] डॉ. प्रभाकर पुरो[illegible]	46
12.	हिन्दी कविता में नई सम्भावनाओं का द्वार खोलती कृति 'जुर्रत ख्वाब देखने की'	डॉ. संजय कुमार डॉ. सुभाष चन्द्र [illegible] 'चौधरी'	53
13.	पातंजल योगसूत्र का साधना मार्ग	डॉ. माधवी चंद्रा	57
14.	मुग्धबोध और अष्टाध्यायी के कृत् प्रत्ययों का अर्थ वैशिष्ट्य	ज्योति	60
15.	संस्कृत साहित्य में गुरु-शिष्य सम्बन्धोल्लेख	डॉ. विशाल भार[illegible]	64
16.	कौटिल्य की प्राचीन ग्रामीण शासन व्यवस्था एवं उसकी प्रासंगिकता	डॉ. हरदेव लाल [illegible]	68
17.	संस्कृत के प्रमुख नाटकों में न्याय व्यवस्था	डॉ. जी. एल. पटीदार डॉ. पुष्पेन्द्र कुमार [illegible]	72
18.	आधुनिक परिप्रेक्ष्य में वास्तुशास्त्र की दृष्टि से वाटिकानिर्माण में वृक्षविचार	डॉ.मुकेश शर्मा	77
19.	संस्कृत साहित्यों में स्त्री-चिन्तन एवं उनकी भूमिका	डॉ. [illegible] शुक्ल[illegible]	81
20.	ज्योतिषशास्त्र की दृष्टि से मानसिक रोगों के नियन्त्रण पर मनोवैज्ञानिकों का चिन्तन	डॉ. [illegible] किशोर [illegible]जल्वाण	83
21.	श्री रामेश्वर दयालु विरचित शान्तामंगल नाटक में गुण विवेचन	डॉ. मनोज कुमार	85
22.	भारतीय भाषाओं के विकास में संस्कृत भाषा का योगदान	डॉ. [illegible]	88
23.	काश्मीर शैवागमों के 'शिवसूत्रम्' में शिवस्वरूप की अवधारणा	डॉ. [illegible]	91
24.	मालवांचल की बोली एवं उपबोलियों की विशेषताओं का समेकित विश्लेषण	डॉ. सुरेश कुमार [illegible]	96
25.	पं. बालकृष्ण भट्ट का साहित्य और हिन्दी नवजागरण	डॉ. [illegible] कुमार [illegible]ण्डेय डॉ. [illegible] कुमार	100

प्राचार्य
राजकीय [illegible] महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
IQAC
Govt. [illegible] Rajgarh (Alwar)

26.	आधुनिक संस्कृत साहित्य की विविध विधाएँ : एक अवलोकन	डॉ. सुषमा त्रिपाठी	104
27.	मध्यकालीन संस्कृति और भक्ति आन्दोलन	डॉ. सरिता	109
28.	कालिदास कृत नाटकों में पद्म विषयक कवि समय मीमांसा	डॉ. [illegible] खण्डेलवाल प्रो. नीरज शर्मा	112
29.	यात्रा साहित्य का हिन्दी फलक	डॉ [illegible] प्रसाद	117
30.	मानसिक विकार निवारण में 'ओउम्' की भूमिका	डॉ विनोद प्रसाद [illegible]टयाल	121
31.	राष्ट्रवाद और आधुनिक कविता	डॉ. राकेश कुमार	123
32.	समाधि में अन्त:करण का महत्त्व	डॉ. [illegible] नौटियाल	126
33.	सङ्कल्पपाठ एवं दिव्यवर्ष परिकल्पना	डॉ. सविता	130
34.	जनसंचार माध्यमों के बदलते परिदृश्य का प्रभाव : आतंकवाद के विशेष सन्दर्भ में	महेश [illegible]	134
35.	प्राचीन कालीन आश्रम व्यवस्था : एक अध्ययन	प्रियंका प्रो. ([illegible]) [illegible] शर्मा	139
36.	उपस्कारभाष्य के सन्दर्भ में विविध वादों का विश्लेषणात्मक समीक्षण	ओम [illegible] झा डॉ.[illegible] कुमार [illegible]ल्य	142
37.	वैयाकरणसिद्धान्तरत्नप्रकाश के अनुसार 'ध्रुवमपायेऽपादानम्' सूत्र के ध्रुवपद का सार्थक्य विचार	[illegible]	147
38.	जौनसारी जनजाति के माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् विद्यार्थियों के गृह वातावरण के विभिन्न आयामों का अध्ययन	कृपाल सिंह प्रो. [illegible]	152
39.	हिन्दी बाल-साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन	पूनम डॉ. [illegible] कुमार	156
40.	आयुर्वेद वाङ्मय में अष्टाङ्गहृदय की महत्ता	[illegible]	159
41.	अष्टाङ्गहृदय की प्राचीनतम टीका 'पदार्थचन्द्रिका' की समीक्षा	सीता	162
42.	अध्यापकों के सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन	[illegible] उपा[illegible] प्रेरणा [illegible]	165
43.	विभक्त्यर्थ निर्णय के सन्दर्भ में विभक्ति-विवेचन	श्रुति	170
44.	चन्द्रनन्दन विरचित मदनादिनिघण्टु : एक परिचय	स्वाति [illegible]	173
45.	भिषगार्यविरचित अभिधानमञ्जरी : एक परिचय	[illegible]	177
46.	कुमाऊँ के लोक-गाथाओं में 'जागर गायन' का सांगीतिक विवेचन	[illegible] [illegible]साँई	180
47.	योग : असुरक्षित एवं निराश्रित किशोर	मनीषा [illegible] डॉ. [illegible] दोभाल	185
48.	अशोक विजयम् नाटक : एक समीक्षा	रूपा [illegible]	189
49.	संस्कृत काव्यों में पर्यावरण शिक्षा	[illegible]	194

प्राचार्य [illegible] महाविद्यालय राजगढ़ (अलवर) राज.
Coordinator IQAC CELL GOVT. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

कालिदास कृत नाटकों में पद्म विषयक कवि समय मीमांसा

डॉ. [illegible] खण्डेलवाल

प्रो. नीरज शर्मा

सारांश

[illegible] संस्कृत साहित्य में [illegible] किया है। [illegible] कवि समय [illegible] राजशेखर द्वारा [illegible] काव्यमीमांसा [illegible] मिलती है। कवि समय [illegible] अशास्त्रीय अर्थात् शास्त्र से [illegible] अलौकिक [illegible] तथा परम्परा [illegible] प्रचलित है। काव्यों में [illegible] देने हेतु ही लगभग सभी कवियों ने उसे अपने काव्यों में स्थान दिया है और दे रहे हैं तथा देते भी रहेंगे। संस्कृत साहित्य के कविकुलगुरु कालिदास ने अपने नाटकों में कवि समय विषयक प्रसिद्धियों का प्रचुर प्रयोग किया है, उन्हीं में पद्म विषयक कवि प्रसिद्धि को मुख्यतया स्थान मिला हुआ है। पद्म [illegible] सौन्दर्य [illegible] अभिव्यक्ति का [illegible] है। [illegible] पद्म का [illegible] पद्म विषयक कवि समय है। [illegible] क्योंकि वह [illegible] की किरणों से प्रफुल्लित [illegible] सौन्दर्य

शोध पत्र

[illegible]

[illegible] आचरण। 'समय' शब्द [illegible] 'कवि समय' [illegible] आचरण या सिद्धान्त [illegible] सम्प्रदाय [illegible] ग्रन्थों में रमणीयता का [illegible]

संस्कृत साहित्य के अन्तर्गत 'कवि समय' शब्द का प्रथम प्रयोग राजशेखर कृत काव्यमीमांसा में प्राप्त होता है। [illegible] राजशेखर ने काव्यमीमांसा के [illegible] अध्याय में 'कवि समय' का अर्थ बतलाया है

"अशास्त्रीयमलौकिकं च परम्परा[illegible] [illegible] स कवि समयः"

अर्थात् अशास्त्रीय (शास्त्र [illegible]) अलौकिक (लोक में अज्ञात) तथा केवल परम्परा में प्रचलित अर्थ का कवि [illegible] प्रयोग करते हैं वह 'कवि समय' है। [illegible]

Coordinator
IQAC CELL
Govt. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

ISSN 2278 - 0327

विषय-सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	ज्योतिषशास्त्र में ग्रहणफल	डॉ. ब्रह्मानन्द मिश्रा	05
2.	भारतीय वास्तुशास्त्र और बहुमंजिले भवन	डॉ. रविन्द्र प्रसाद उनियाल	10
3.	श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान् श्रीकृष्ण की दिव्य विभूतियों की समीक्षा	डॉ. अक्षय कुमार मिश्र	17
4.	अभिज्ञानशाकुन्तलम् के अन्तर्गत मानवीय संवेदनाओं का विश्लेषण	डॉ. उष्मा यादव	23
5.	आदिकाव्य रामायण में वर्णित सामाजिक उपदेश	डॉ. दीप लता	29
6.	आस्तिकदर्शनों की एकरूपता	डॉ. विवेक शर्मा	33
7.	कालिदास की शैक्षिकदृष्टि	डॉ. अनिल कुमार	36
8.	रामचरितमानस और तुलसीदास की दार्शनिक स्थापनाएँ	डॉ. राजेश कुमार	40
9.	महाभारतकालीन मिथक का आधुनिक-प्रयोग : 'अंधायुग'	डॉ. अनिल शर्मा	43
10.	भवानीप्रसाद मिश्र के काव्य में सांस्कृतिक संदर्भ	डॉ. सरिता	48
11.	एक थे आग़ा हश्र कश्मीरी	डॉ. आशा, डॉ. अनिल शर्मा	51
12.	शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य में योग शिक्षा	डॉ. मनोज प्रसाद नौटियाल डॉ. दीवान सिंह राणा	55
13.	भारत निर्माण तथा शिक्षा का माध्यम : हिंदी भाषा का महत्व और प्रगतिशील भारत में उसका योगदान	डॉ. प्रियंका सिंह निरंजन डॉ. जिप्सी मल्होत्रा	60
14.	गाँधी जी का सर्वोदयदर्शन एवं वर्तमान चुनौतियां	डॉ. किरन बाला	64
15.	महाकवि कालिदास का पर्यावरणीय चिन्तन	डॉ. शिवदत्त आर्य	67
16.	शिक्षा एवं वेद	डॉ. सुमन कुमारी	72
17.	हिन्दी उपन्यास लेखन और महानगरीय बोध	डॉ. सुरेश कुमार बैरागी	75
18.	यशोधरा में नारीवादी दृष्टिकोण	डॉ. कुसुम नेहरा	81
19.	भारतीय साहित्य में आदिवासी विमर्श	डॉ. रश्मि शर्मा	84
20.	संज्ञानात्मक मनोविज्ञान और अधिगम	डॉ.अनूप कुमार पाण्डेय	88
21.	पूर्व माध्यमिक स्तर के शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षा अधिकार अधिनियम (2009) के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन	डॉ. आलोक शर्मा डॉ. आशीष कुमार बाजपेयी	93
22.	भवभूति प्रणीत नाटकों में 'वर्ण वर्ग' संबद्ध कविसमयानुशीलन	डॉ. वर्षा खण्डेलवाल	99
23.	श्रुति स्मृतियों में नारी का स्थान	डॉ. इतिश्री महापात्र	104

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
IQAC CELL
Govt. College Rajgarh Raj.

ISSN 2278 - 0327

24.	भारत की सांस्कृतिक एवं वैज्ञानिक विरासत संस्कृत क्यों पढ़ी जानी चाहिए	डॉ. मोना शर्मा	107
25.	वैदिक साहित्य में ऋत एवं सत्य की अवधारणा	डॉ. प्रवीण बाला	111
26.	तैत्तिरीयोपनिषद् में आचार संहिता और आचार्य-शिष्य परम्परा	डॉ. सुमन रानी	114
27.	'वामनचरितम्' में प्रकृति सौन्दर्य	डॉ. नीरज शर्मा	117
28.	संस्कृत साहित्य और आयुर्वेद	डॉ. विशाल भारद्वाज	120
29.	सिद्धहेमचन्द्र : संक्षिप्त परिचय	डॉ. ज्योति शर्मा	124
30.	करोना और ज्योतिष विज्ञान	ओम प्रकाश अरोड़ा	127
31.	समकालीन हिंदी कविता के विकास में अस्मितामूलक विमर्शों की भूमिका	प्रदीप कुमार ठाकुर	130
32.	मैत्रायणीय आरण्यक में षडङ्ग योग	नितिन कुमार गावकरे	133
33.	शिशुपालवधम् और नैषधीयचरिम् में वर्णित राजा के कर्त्तव्य	रामवीर	136
34.	वृक्षायुर्वेद में वृक्ष-व्याधि दोष व चिकित्सा	प्रियंका देवी	141
35.	भीष्मचरितम् महाकाव्यम् में वर्णित सांस्कृतिक मूल्य	तृप्ति शर्मा	144
36.	उपसर्गों का द्योतकत्त्व एवं वाचकत्त्व यास्कीय निरुक्त के परिप्रेक्ष्य में	संदीप	148
37.	किशोरावस्था में आत्महत्या की प्रवृत्ति एवं मानसिक असन्तुलन का अध्ययन	कल्पना जैन प्रो. बनवारी लाल जैन	153
38.	हाईस्कूल स्तर की छात्राओं के नैतिक मूल्यों पर विद्यालयीन वातावरण के प्रभाव का अध्ययन	राजलक्ष्मी प्रो. (डॉ.) मोहन सिंह पंवार	158
39.	आनन्दरामायण में विष्णु के दशावतार	सुमन देवी	162
40.	माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर मानसिक स्वास्थ्य के प्रभाव का अध्ययन	अशोक कुमार किस्कू ऋतु शेखर	165
41.	अलंकारप्रयोग के निकष पर राजेन्द्रकर्णपूर : एक विश्लेषण	संदीप कुमार यादव	170
42.	किशोरावस्था के छात्र एवं छात्राओं के तनाव का तुलनात्मक अध्ययन	प्रतिभा गोयल डॉ. किरण मिश्रा	174
43.	नैषधप्रकाश टीका में व्याकरण द्वारा विशिष्ट काव्यार्थ की उद्भावना	कृष्ण आर्य	178
44.	माध्यमिक स्तर पर कार्यरत अध्यापकों का समावेशी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन	नगनारायण उपाध्याय प्रो. सुनीता गोदियाल	182
45.	ऋग्वेद में वाग्ब्रह्म	कृष्णकान्त सरकार	187
46.	रामायण में वर्णित अस्त्र-शस्त्र	सोरन सिंह	190
47.	मत्स्यपुराण में राजभवन वर्णन	कन्हैया कुमार झा	195
48.	प्राचीन कालीन स्त्रियों का स्वरूप	रिंकू कुमार जैन	198
49.	आधुनिक संस्कृत साहित्य की प्रमुख विधाएँ	शेष नाथ मिश्र	201
50.	संवेगात्मक बुद्धि के विविध आयाम	दीपक कुमार पाठक	209

प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
IQAC CELL
Govt. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

ISSN 2278 - 0327

भवभूति प्रणीत नाटकों में 'वर्ण वर्ग' संबद्ध कविसमयानुशीलन

डॉ. वर्षा खण्डेलवाल
सहायक आचार्य, संस्कृत
राजकीय कन्या महाविद्यालय
राजसमन्द (राजस्थान)

सारांश

'संस्कृत साहित्य के भण्डार' में काव्य के कला पक्ष तथा भाव पक्ष के साथ-साथ काव्य की चारुता भी प्रमुख स्थान रखती है। इससे काव्य में आनन्द का स्रोत प्रवाहित होता रहता है तथा काव्य के पठन-पाठन में आनन्दानुभूति होती है। काव्यों में चारुता/रमणीयता को प्रस्फुटित करने वाला वह तत्व 'कवि समय' है, जो काव्य की सनातन परम्परा का अभिन्न अंग है। अपने काव्यों में आनन्द की अनुभूति हेतु या रमणीयता के प्रसार हेतु लगभग सभी कवियों ने 'कवि समय' को अपनाया है। कवि समय का शाब्दिक अर्थ कवि प्रसिद्धि है। सौन्दर्य की पूर्ण अभिव्यक्ति हेतु कुछ परम्परायें कवियों में प्रसिद्ध हो जाती हैं, जो भावी कवियों में भी निरन्तर चलती रहती हैं, वही कवि समय है। यायावरीय राजशेखर ने इसे सर्वप्रथम परिभाषित किया। कवि समय के अन्तर्गत ही काव्य सम्प्रदाय में वर्ण-वर्ग सम्बन्धित कई प्रकार की कवि प्रसिद्धियाँ पाई जाती हैं, जो वर्तमान में भी व्यावहारिक रूप लिये हुए हैं। इसके अन्तर्गत मुख्यतः शुक्ल-गौर अभेद, पीत-रक्त अभेद, नील-हरित-कृष्ण अभेद तथा आँखों के अनेक रंगों से सम्बन्धित कवि समय को स्थान प्राप्त है। इन वर्णों में परस्पर अभेद मानने में रंगों के सूक्ष्म अन्तर को अनदेखा कर समष्टि रूप ग्रहण की वृत्ति ही मुख्य जान पड़ती है। महाकवि भवभूति ने अपने नाटकों में वर्ण-वर्ग सम्बन्धी कवि समय को स्थान दिया है। उन्होंने वर्ण-वर्ग में आने वाली कवि प्रसिद्धियों का यथाप्रसंग प्रयोग किया है। इसलिये गौर वर्ण हेतु शुक्ल वर्ण वाले पदार्थों की उपमा, कृष्णाभ मेघ हेतु नील वर्ण की उपमा, अग्नि आदि में पीत-रक्त वर्ण मिश्रित होने से उनमें अभेद प्रतीति, वर्णन अभिव्यंजना के आधार पर नेत्रों की वर्ण-वर्णना आदि उनके काव्य में विस्तृत रूप से मिलती है। इससे नाटकों में अध्ययन करने पर आनन्दानुभूति होती है। वर्ण-वर्ग सम्बन्धी कविप्रसिद्धि अभी भी परम्परा रूप से संस्कृत काव्य साहित्य में प्रचलित है।

बीज शब्द :- वर्ण, आनन्द, शुक्ल, गौर, पीत, रक्त, नील, कृष्ण, कविप्रसिद्धि, परम्परा, कवि समय, अभिव्यंजना

वैश्विक परिदृश्य में संस्कृत साहित्य का अपूर्व भण्डार प्राप्त होता है। इस भण्डार में काव्य के सभी पक्ष के साथ काव्य की चारुता प्रधानता रखती है, जो कवि समय या कवि प्रसिद्धि द्वारा अनुप्राणित है। भारतीय काव्य परम्परा में कवि समय काव्य का चारुत्व विधायक अंग रहा है। सर्वप्रथम कवि समय का स्पष्ट वर्णन राजशेखर द्वारा प्रणीत ''काव्यमीमांसा'' ग्रन्थ में मिलता है। वस्तुतः कवि समय का शाब्दिक अर्थ है - कवि प्रसिद्धि या कवियों का समान आचरण। कवि राजशेखर कवि समय को परिभाषित करते हुए कहते हैं -

'' *अशास्त्रीयमलौकिकं च परम्परायातं यमर्थमुपनिबध्नन्ति कवयः स कवि समयः।*''

अर्थात् कवि लोग जिस अशास्त्रीय, अलौकिक और परम्परायात अर्थ का उपनिबन्धन करते हैं, वह कवि समय है।

कवि राजशेखर ने इसे और स्पष्ट करते हुए लिखा है -

'' *पूर्वे हि विद्वांसः सहस्रशाखं साङ्गं च वेदमवगाह्य, शास्त्राणि चावबुध्य, देशान्तराणि द्वीपान्तराणि च परिभ्रम्य, यानर्थानुपलभ्य प्रणीतवन्तस्तेषां देशकालान्तरवशेन अन्यथात्वेऽपि तथात्वेनोपनिबन्धो यः स कवि समयः।*''

अर्थात् प्राचीन विद्वानों के द्वारा सहस्रों शाखाओं वाले वेद का अंगों सहित अध्ययन करके, शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करके तथा देशान्तर-द्वीपान्तरों का परिभ्रमण करके जिन अर्थों का ज्ञान किया गया, उनके देशकालवश अन्यथा हो जाने पर भी उन अर्थों का उसी रूप में निबन्धन कवि समय है।

संस्कृत साहित्य में काव्यों का गहन अध्ययन करने पर हम पाते हैं कि कवि समय उनकी श्रेष्ठता परिलक्षित करने में एक कारक का स्थान रखता है, इससे काव्य में [illegible]

प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
IQAC CELL
GOVT. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

RNI MPHIN/2013/61414

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal

ज्योतिर्वेद - प्रस्थानम्

संस्कृत ज्ञान मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

दशम वर्ष द्वितीय अंक. मई - जून 2021

भारतीय ज्योतिषम्

₹ 30

दो गज की दूरी मास्क है जरूरी

प्राचार्य
राजकीय ... महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

समन्वयक
Coordinator
IQAC-CELL
GC राजकीय ..., Rajgarh ... Raj.

कोरोना संक्रमण काल में मीडिया की भूमिका एवं प्रभाव : एक अध्ययन

डॉ. वर्षा खण्डेलवाल*

कोरोना वायरस कई प्रकार के विषाणुओं का एक समूह है, जो स्तनधारियों और पक्षियों में रोग उत्पन्न करता है। ये आरएनए वायरस होते हैं। इनके कारण मानवों में श्वास तंत्र संक्रमण पैदा हो सकता है, जिसकी गहनता हल्की सर्दी–जुकाम से लेकर अति गंभीर जैसे मृत्यु तक हो सकती है। अभी तक रोगलक्षणों (जैसे कि निर्जलीकरण या डिहाइड्रेशन, ज्वर आदि) का उपचार किया जाता है, ताकि संक्रमण से लडते हुए शरीर की शक्ति बनी रहे। कोरोना वायरस से पीडित लोगों के लक्षणों में मुख्यतः तेज बुखार, खांसी, गले में खराश, सांस लेने में तकलीफ होना, सरदर्द, स्वाद या गंध का चले जाना, ऑक्सीजन लेवल का गिरना, आँख आना और अपच होना आदि हैं।

चीन के वुहान शहर से उत्पन्न होने वाला 2019 नोवेल कोरोनावायरस इसी समूह के वायरसों का एक उदाहरण है, जिसका संक्रमण 2019–20 काल में तेजी से उभरकर 2019–20 वुहान कोरोना वायरस प्रकोप के रूप में फैलता जा रहा है। WHO ने इसका नाम COVID-19 रखा। इस समय लगभग पूरा विश्व कोरोना महामारी की चपेट में आया हुआ है। संक्रमण का दौर तेजी से जारी है। सरकार द्वारा कोरोना महामारी से बचने के लिये आत्म–रक्षण के कुछ नियम भी बताये जा रहे हैं, जैसे अपने मुँह–नाक को मास्क द्वारा ढकना, सेनीटाइजेशन का प्रयोग करना, बार–बार हाथ लगभग 20 सैकण्ड तक धोना, सोशल [illegible] खाँसते या छींकते वक्त रूमाल लगाना आदि। दिसम्बर [illegible] महामारी के असर में कुछ कमी देखी जा रही थी। परन्तु [illegible]

प्राचार्य
राजकीय ... महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
IQAC CELL
GOVT. College Rajgarh (Alwar) Raj.

Plant Archives Vol. 21, Supplement 1, 2021 pp. 1852-1855 e-ISSN:2581-6063 (online), ISSN:0972-5210

Plant Archives

Journal homepage: http://www.plantarchives.org
doi link : https://doi.org/10.51470/PLANTARCHIVES.2021.v21.S1.298

PREVENTIVE POTENTIAL OF *DALBERGIA SISSOO* ROXB. ON DMBA-INDUCED SKIN CARCINOGENESIS IN MICE

Yogendra Singh Sehra[1*] and Jaimala Sharma[2*]
[1]Department of Zoology, University of Rajasthan, Jaipur- 302004 (India)
Email- sehra.yogendra786@gmail.com
[2]Department of Zoology, University of Rajasthan, Jaipur- 302004 (India)
Corresponding author Email- jaimalauor@gmail.com

ABSTRACT

The present study was carried out to investigate preventive potential of *Dalbergia sissoo* leaf extract (in Petroleum Ether) against chemical induced skin carcinogenesis in Swiss albino mice. Skin tumor or papilloma was developed by topical application of DMBA on intrascapular region of mice as initiator and croton oil twice weekly for 16 weeks. The animals were divided into four groups: Group I (vehicle treated control), Group II (*Dalbergia sissoo* leaf Petroleum Ether extract (control)); group III (carcinogenic treated control) and group IV (*Dalbergia sissoo* leaf petroleum ether extract 200 mg/kg orally for 16 weeks along with DMBA treatment). After the 16th week of treatment, the body weight and tumor morphology were observed and compared with carcinogen treated control as well as vehicle treated control. Two stage protocol was used to evaluate the preventive activity. For initiation, single topical application of a carcinogen (7, 12 – Dimethylbenz (a) anthracene (DMBA)), is followed by croton oil (promoter) 2 times in a week for 16 weeks. A significantly decline in tumor burden, tumor incidence and cumulative no. of papillomas was detected, along with inhibition of tumor multiplicity in mice treated with *Dalbergia sissoo* leaf extract in comparison to the group treated with DMBA and croton oil.

Keywords: Dalbergia sissoo, Petroleum Ether extract, DMBA, tumor morphology, body weight.

Introduction

Cancer is a group of diseases which cause cells in the body to alteration and grow out of control. In both the developed and developing countries, cancer is the second most fatal disease. The worldwide burden of cancer continues to upsurge largely for the reason that of the growth of the world population and aging together with an rising adoption of cancer-causing behaviour, mainly smoking, in developing countries (De Santis *et al.*, 2011; Qian *et al.*, 2011). Amongst all of the human cancers, skin cancer is one of the most common and its incidence is increasing rapidly all over the world. A polycyclic aromatic hydrocarbon, 7,12-Dimethyl benz (a) anthracene (DMBA), is a procarcinogen and thus requires metabolic activation to come to be an ultimate carcinogen. During the metabolic activation of DMBA, the active metabolite, dihydrodiol epoxide, generated which binds to and causes DNA damage. Through the metabolic activation of DMBA higher level reactive oxygen species are also generated. It is widely used in Swiss albino mice as an initiator as well as promoter to induce skin carcinogenesis (Miyata *et al.*, 2001; Nigam *et al.*, 2007; Sharma and Goyal, 2015).

The current treatments of cancer include surgery, conventional medicine, chemotherapy and radiotherapy. Although the limitations of these therapies are used, at ever after end of the standard treatment procedure, there are high rates of metastasis and dissemination (Huang *et al.*, 2010; Hsiao and Liu, 2010).

Began with the folk medicine, the use of plant products as anti-carcinogenic agents has an extensive history and over the years has been assimilated into allopathic and traditional medicine (Sharma *et al.*, 2009). Plants related compounds are also of attention due to their multitargeting character, comparative lack of toxicity, lower cost and easy availability easily (Gupta *et al.*, 2011; Tan *et al.*, 2015; Sayyad *et al.*, 2016).

Dalbergia sissoo Roxb. (Family *Fabaceae*) also called 'Shisham' is used since time immemorial for cure of several ailments like dysentery, burning sensations, leucoderma, dyspepsia and some skin ailments. It is memory enhancer and anti-inflammatory. Its leafs have significant levels of flavonoids which displayed antioxidant activity twice of usually used antioxidants like Selenium and vitamin C (Chetty *et al.*, 2008). It prevents central nervous system damage also (Mukhtar *et al.*, 2010). All the parts of plant are traditionally used in treating different diseases. Antidiabetic, Anti-termite, Analgesic and Antipyretic, Anti-inflammatory, Anthelmintic, Anti-spermatogenic, Antidiarrhoeal, Antinociceptive, Neuroprotective, Molluscicidal, Antioxidant and Osteogenic activities are known (Bharath *et al.*, 2013; Sultana *et al.*, 2015; Bhadhya *et al.*, 2017).

Materials and Methods

Chemicals: The chemical 7, 12 dimethylbenz (a) anthracene (DMBA) and croton oil (promoter) were procured from (Sigma Chemicals Co. St Louis, MO). DMBA was dissolved

प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय
(अलवर) राज.
Coordinator
IQAC-CELL
GOVT. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

Jan 2021

Multi-disciplinary International Journal

Innovation
The Research Concept

Certificate of Paper Publication

RNI UPBIL/2016/68367
ISSN 2456-5474
SJIF-6.122
IIJIF-4.112
Indexed Google Scholar

This is to certify that the paper titled...... महात्मा गांधी का महिलाओं के प्रति सामाजिक न्याय का दृष्टिकोण

Author : अरूण कुमार
Designation : सह आचार्य
Dept. : राजनीति विज्ञान
College : राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़, अलवर, राजस्थान, भारत

has been published in our Peer Reviewed International Journal
vol. ...5... issue ...12... month ...January... year ...2021...
The mentioned paper is measured upto the required.

Dr Rajeev Misra
(Editor/Secretary)

H-33

Coordinator
IQAC-CELL
GOVT. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

Dr. Asha Tripathi
(Vice President)

Social Research Foundation
Non Governmental Organisation
128/170, H-Block, Kidwai Nagar, Kanpur - 208011
(Cont) 0512-2600745, 9335332333, 9839074762 (E-mail) socialresearchfoundation@gmail.com (Web) www.socialresearchfoundation.com

GOVT. OF INDIA RNI NO. UPBIL/2015/62096

ISSN 2229-3620

UGC Approved
Care Listed Journal

SHODH SANCHAR Bulletin

PUBLISHED BY

sanchar
Educational & Research Foundation

Chief Editorial Office

Certificate of Publication

Ref. No.: SSB/2021/SIQ41

Date: 27-03-2021

Authored by

डॉ0 रजनी मीना
सहायक आचार्य
राजनीति विज्ञान
राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़ (अलवर) राजस्थान

for the Research Paper titled as

कोविड-19 महामारी में पुलिस की भूमिका

Published in

Shodh Sanchar Bulletin, Volume 11, Issue 41, January to March 2021

Coordinator
IQAC CELL
Govt. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

SHODH SANCHAR BULLETIN

Dr. Vinay Kumar Sharma
Editor in Chief

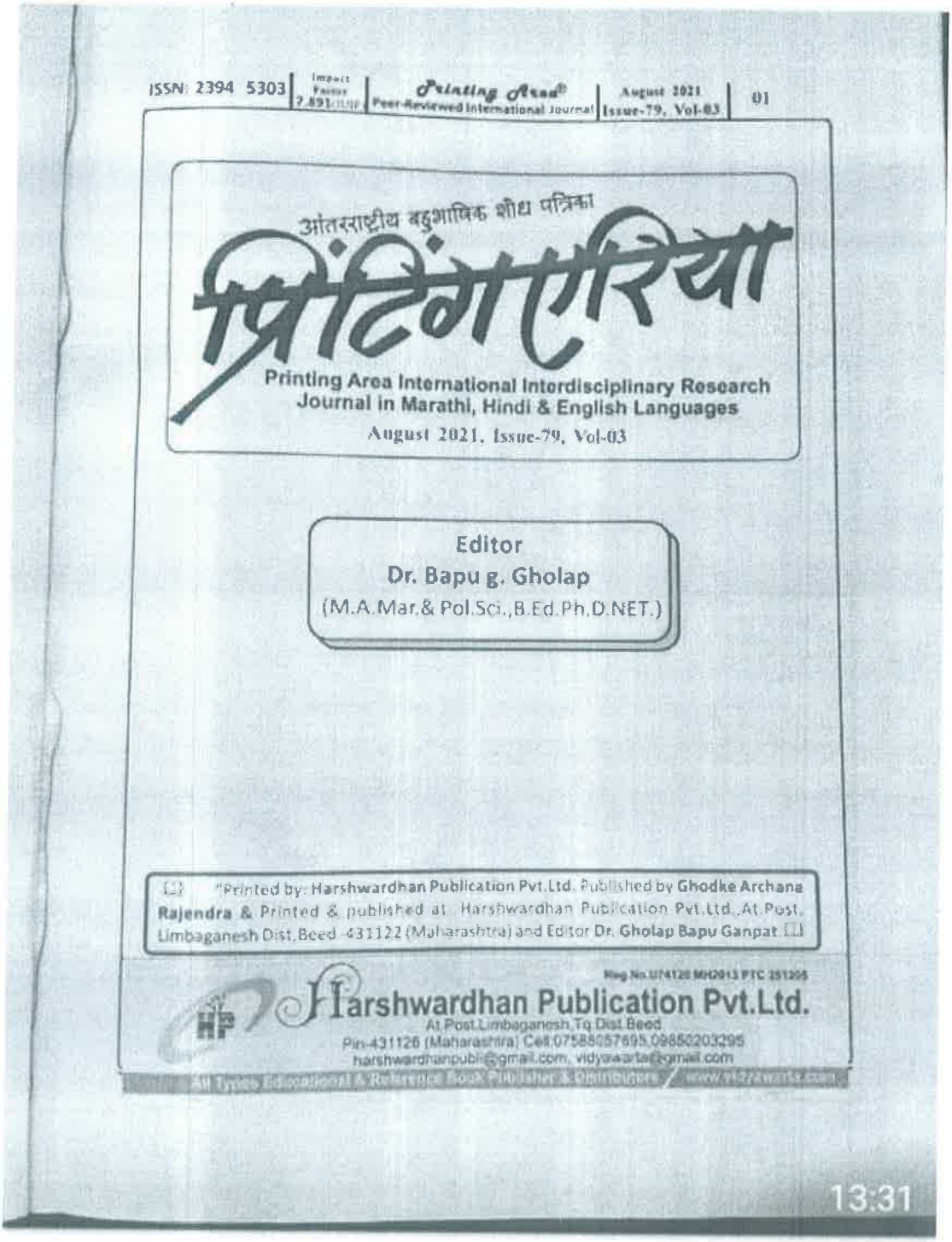

Pankaj Nagar
6 photos

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 7.891(IIJIF) | Printing Area® Peer-Reviewed International Journal | August 2021 Issue-79, Vol-03 | 01

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research Journal in Marathi, Hindi & English Languages

August 2021, Issue-79, Vol-03

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

"Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist.Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

13:31

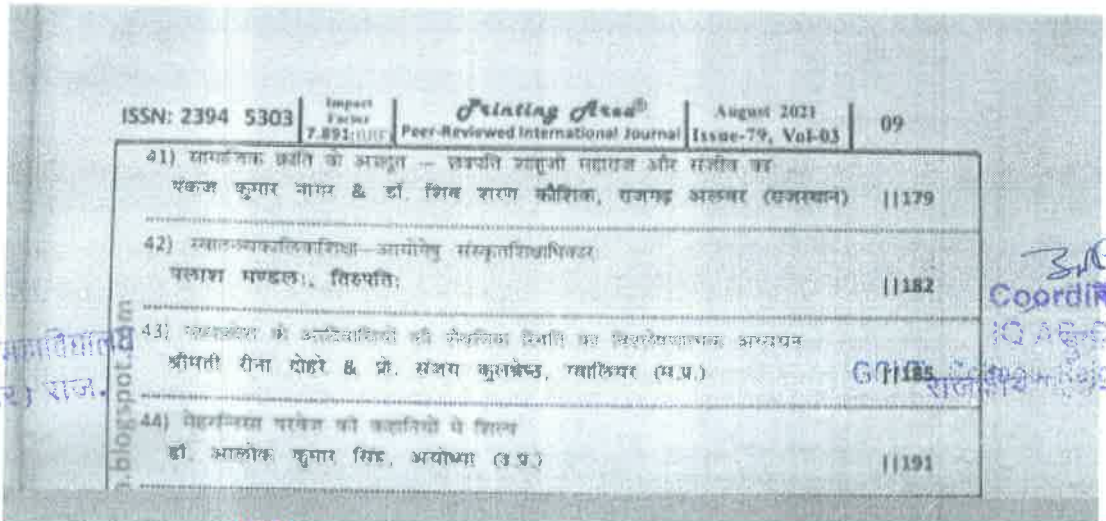

ISSN: 2394 5303 | Impact Factor 7.891(IIJIF) | Printing Area® Peer-Reviewed International Journal | August 2021 Issue-79, Vol-03 | 09

41) [illegible] के [illegible] — छत्रपति शाहूजी महाराज और [illegible]
पंकज कुमार नागर & डॉ. शिव शरण कौशिक, राजगढ़ अलवर (राजस्थान) ||179

42) [illegible]—आधोनेषु संस्कृतशिक्षाभिकर
पलाश मण्डलः, तिरुपतिः ||182

43) [illegible] के [illegible] की शैक्षणिक स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन
श्रीमती रीना दोहरे & प्रो. संजय कुलश्रेष्ठ, ग्वालियर (म.प्र.) ||185

44) [illegible] की कहानियों में [illegible]
डॉ. आलोक कुमार सिंह, अयोध्या (उ.प्र.) ||191

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator / समन्वयक
IQAC CELL
GPG College Rajgarh (Alwar) Raj.
राजगढ़

Shiv
today at 1:33 pm

शैक्षिक मंथन

ग्राम विकास और राष्ट्रोत्थान

अनुक्रम

56	Developing Villages Towards Developing ...	Dr. J. S. Ghildhamar
58	Reviving ancient era of prosperous farmers ...	Dr. Rakesh K. Pandey
60	Evolving Agriculture – the Lifeline of ...	Dr. Geeta Bhatt
62	Migration of tribal people: Strategies for ...	Prof. Vipul J. Somani

संपादकीय

डॉ. राजेन्द्र शर्मा
सम्पादक

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
IQAC CELL
GOVT. College, Rajgarh (Alwar) Raj.
राजकीय महाविद्यालय

निराशिता से मुक्त होने की कोशिश आरम्भ कर दी। ❑

डॉ. शिव शरण कौशिक
सह आचार्य, हिन्दी
रा. महा. राजगढ़,
अलवर (राज.)

13

सामाजिक परिवर्तन और भारतीय ग्राम

परिवर्तन प्रकृति और मानव जीवन का शाश्वत मूल्य है। सदियों से देश और दुनिया के भौगोलिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक, धार्मिक तथा अन्यान्य क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के परिवर्तन होते रहे हैं। ये परिवर्तन सामान्यतया सकारात्मक भी हो सकते हैं और नकारात्मक भी। परिवर्तन के प्रति आकर्षण और विकर्षण दोनों ही उत्पन्न होते रहे हैं। यदि यह परिवर्तन मानवीय जीवन को उन्नति की ओर ले जाते हैं, या यूं कहें कि मानवीय जीवन में आई मुश्किलों को हल करते हैं, तब यह परिवर्तन अनुकूल और सकारात्मक कहे जाते हैं। भारतीय समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया के विभिन्न स्तरों को अलग-अलग काल खंडों में देखा-परखा जाता रहा है। समाज के विभिन्न आंतरिक संबंध सूत्रों को भारतीय ग्राम संरचना के मैत्री भाव, बंधु भाव, सहयोग भाव और करुणा भाव में देखा जा सकता है। सद्भाव और मनुष्य-भाव की यह सभी विशेषताएँ भारतीय ग्रामीण समाज की पूरी रही हैं। ग्राम समाज का यह स्वरूप अखिल भारतीय स्तर पर समान रूप से व्याप्त रहा है और इसे सभी प्रांतों में अनुभव किया जाता रहा है। अभावों में सुख की अनुभूति करना अर्थात् कम से कम संसाधनों में जीवन को उत्कृष्ट और समुन्नत बनाकर परम संतुष्टि प्राप्त करने की भावना ही इसके केंद्र में रही है। यह दृष्टि संभवतः भारत में देशव्यापी थी। कला और संस्कृति की दृष्टि से भी भारतीय ग्राम समाज सशक्त और समृद्ध रहा है। अनेक लोक रंग तथा लोक कलाधाराएँ परस्पर मूल मिलाकर इसमें व्याप्त रही हैं। कृषि, हस्तकला, लघु एवं कुटीर उद्योग, काष्ठ कला, प्रस्तर कला, धार्मिक आयोजन, सांस्कृतिक समारोह आदि का प्रचुर भाग में विस्तार हम देखते आए हैं जिसमें ग्राम्य जन के जीवन का परिष्कार तथा जीवन स्तर में अभिवृद्धि होती रही है। एक समय था जब कहा जाता था कि यदि मनुष्य जीवन का व्यापक प्रेम और सौंदर्य यदि कहीं देखना है तो वह भारत के ग्राम समाज में ही देखा जा सकता है। हमारे गाँव के लोग ही थे जिन्होंने वन-उपवन, नदी-पर्वत तथा प्रकृति के सभी उपादानों की रक्षा की। इसलिए यह कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति का इतिहास वस्तुतः भारतीय ग्राम समाज का इतिहास ही है।

वर्तमान में विकसित और प्रगतिशील भारत की कल्पना को गाँव की प्रगतिशीलता के बिना साकार नहीं किया जा सकता। आधुनिकता के इस दौर में भारतीय विकास के सारे चरण, सारे तकनीकी संसाधन तथा सशक्त भौतिक संसाधनों का विस्तार और विकास गाँव में भी परम आवश्यक है। आज गाँव के सामाजिक और आर्थिक क्षेत्रों में आमूलचूल कार्य करने की आवश्यकता है। पानी के अभाव में सूखे की स्थिति को देखते हुए जल संरक्षण की दृष्टि से जन जन को संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है। इससे न केवल खाद्यान्न, तिलहन, सब्जी, दुग्ध, फल आदि के क्षेत्रों में कल्पनातीत वृद्धि होगी, बल्कि साथ ही साथ ग्रामीण जनों के जीवन स्तर में भी उत्तरोत्तर वृद्धि होगी।

यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि भारत की आज़ादी के आंदोलन की अनेक धाराओं का नेतृत्व ग्रामीण लोगों ने ही किया था। स्वतंत्रता सेनानियों में से अधिकांश की पृष्ठभूमि ग्रामीण थी जिनमें निश्छल देशभक्ति कूट-कूट कर भरी हुई थी। गांधी जी की हिंद-स्वराज की कल्पना भी ग्राम स्वराज की ही कल्पना है जिसे पहले हम अंत्योदय में तथा वर्तमान में आत्मनिर्भरता के विभिन्न स्तरों में देख पा रहे हैं। यह सच्चाई है कि जब तक हमारे गाँव आर्थिक रूप से, शैक्षिक रूप से, भौतिक संसाधनों की दृष्टि से आत्मनिर्भर नहीं होंगे तब तक देश का समग्र विकास नहीं होगा। गरीबी व बेरोजगारी से मुक्त शिक्षित एवं स्वास्थ्य-संपन्न तथा कानूनी विवादों के प्रति जागरूक ग्राम्य-जन की कल्पना ही ग्राम स्वराज की कल्पना है।

आज जिस प्रदूषण की विकट समस्या से विश्व जूझ रहा है वह भी गाँव में नगण्य है। इसलिए सरकारों को चाहिए कि आज गाँव में अंतर्राष्ट्रीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा व्यवस्था, चिकित्सा, सड़क, बिजली, संचार साधन आदि की सुदृढ़ व्यवस्था करें। तभी हमारे गाँव समुन्नत होंगे तथा हमारी ग्राम संस्कृति का समुचित विकास हो सकेगा। इसी से तथाकथित 'इंडिया' और भारत के बीच का अंतराल [illegible] है। कृषि के क्षेत्र में किसानों द्वारा की जाने वाली परम्परागत खेती से तुलनात्मक रूप से कम लाभ होता था। अब वैज्ञानिक उपकरणों तथा नई तकनीक के माध्यम से कृषि में उन्नत फसलें और व्यापारिक फसलों का भी विस्तार होने लगा है। चिकित्सा सुविधाओं में उल्लेखनीय विस्तार और [illegible] ग्रामीण [illegible] स्थानीय ग्राम [illegible] में रहकर उचित स्वास्थ्य लाभ प्राप्त [illegible] शहरों में होने वाले विकास का लाभ कुछ लोगों तक ही केंद्रित रहता है जबकि कृषि केंद्रित विकास का लाभ जन-जन तक पहुँचता है। इसलिए हमारे [illegible] सभी कल-कारखानों [illegible] का विकास गाँवों तक पहुँ[illegible]

वस्तुतः भारत की [illegible] आंतरिक संस्कृति है। [illegible] अन्तःकरण एक परिवार की अवधारणा है। यह एक सजीव, सक्रिय, स्वावलंबी, [illegible]

Coordinator
IQAC CELL
GOVT. College, Rajgarh (Alwar) Raj.
प्राचार्य
रा. [illegible] महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

GOVT. OF INDIA RNI NO. UPBIL/2014/56766

ISSN 2348-2397

UGC Approved
Care Listed Journal

Shodh Sarita

Certificate of Publication

Ref. No.: SS/2021/SIV1

Date: 27-03-2021

Authored by

डॉ० रजनी मीना
सहायक आचार्य
राजनीति विज्ञान
राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़ (अलवर)

for the Research Paper titled as

अलवर लोकसभा चुनाव में जाति की भूमिका।

Published in

Shodh Sarita, Volume 8, Issue 29, January to March 2021

PUBLISHED BY

sancHar
Educational & Research Foundation

Chief Editorial Office

Dr. Vinay Kumar Sharma
Editor in Chief

Coordinator
IQAC
Govt. College Rajgarh (Alwar) Raj.

प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

IJARESM

ISSN: 2455-6211, New Delhi, India

International Journal of All Research Education & Scientific Methods

An ISO & UGC Certified Peer Reviewed Multi-disciplinary Journal

UGC Journal No.: 7647

Certificate of Publication

चिरन्जी लाल रैगर

सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, राजकीय महाविद्यालय, राजगढ़, अलवर

TITLE OF PAPER

कोरोना महामारी का पर्यावरण पर प्रभाव एक भौगोलिक अध्ययन

has been published in

IJARESM, Impact Factor: 7.429, Volume 9 Issue 3, March-2021

Paper Id: IJARESM/Mar21

Date: 28-03-2021

CERTIFIED ISO 9001:2008 JOURNAL

IJARESM INDIA Auth. Signatory

Authorized Signatory

प्राचार्य
राजकीय महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
IQAC CELL
GOVT. College, Rajgarh (Alwar) Raj.

The International Journal of Analytical and Experimental Modal analysis

An UGC-CARE Approved Group - II Journal

An ISO : 7021 - 2008 Certified Journal

ISSN NO: 0886-9367

IJAEMA

Certificate of Publication

This is to certify that the paper entitled CERTIFICATE ID:IJAEMA/5896

रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान में पारिस्थितिकी संकट एवं संरक्षण

Authored by :

डॉ. जगफूल मीना

From

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजगढ़, अलवर, राजस्थान

Has been published in

IJAEMA JOURNAL, VOLUME XIII, ISSUE VI, JUNE- 2021

Michal A. Olszewski Editor-In-Chief
IJAEMA JOURNAL

6.3 IMPACT FACTOR

ISO International Organization for Standardization 7021-2008

http://ijaema.com/

रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान में पारिस्थितिकी संकट एवं संरक्षण

पीएच.डी शोधार्थी :- कमलेश कुमार मीणा , भूगोल विभाग , राजर्षि भर्तृहरि मत्स्य विश्वविद्यालय , अलवर , राजस्थान

शोध निर्देशक :- डॉ. जगफूल मीना , सह आचार्य , भूगोल विभाग , राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय राजगढ़ , अलवर , राजस्थान

शोध पत्र सारांश

रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान लंबे समय से अस्तित्व में है। रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान की प्रसिद्धि का अंदाजा हम इसी बात से लगा सकते हैं कि यहाँ पर देशी एवं विदेशी पर्यटक इस टाइगर रिजर्व को देखने आते हैं। कभी राजाओं का पसंदीदा शिकारगाह रहा यह राष्ट्रीय उद्यान दुनिया भर के वन्यजीव प्रेमियों के लिए किसी जन्नत से कम नहीं है। यह अभयारण्य विलुप्त हो रहे बाघों की आबादी बढ़ाने के लिए आज के समय में सबसे सुरक्षित स्थल माना जाता है । नेशनल जियोग्राफी और डिस्कवरी नेशनल जियोग्राफी और डिस्कवरी चैनल जैसे बड़े चैनल सालों से यहां के वन्यजीवों पर डॉक्यूमेंट्री बनाते आ रहे हैं। रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान उत्तर भारत का सबसे बड़ा और सबसे प्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यान है। रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान भारत के नक्शे में स्थान रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान दक्षिण-पूर्वी राजस्थान के सवाई माधोपुर जिले में स्थित है, जो जयपुर से लगभग 130 किमी दूर है। आजादी से पहले यहां का जंगल जयपुर के महाराजाओं के शिकार क्षेत्रों में से एक था। रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान अपने बाघों के लिए पूरी दुनिया में प्रसिद्ध है, अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों ने यहां बाघों पर वृत्तचित्र और शोध किए हैं। रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान वनस्पति और जीव रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान में कौन सा जानवर है हालांकि रणथंभौर अपने बाघों के लिए प्रसिद्ध है, लेकिन यह वन्य जीवन में बहुत समृद्ध है। वर्तमान में इस अभयारण्य में बाघों की संख्या में बढ़ोतरी होने से पारिस्थितिकी संतुलन पर प्रभाव पड़ा है अतः इस शोध पत्र में रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान में पारिस्थितिकी संकट एवं संरक्षण का भौगोलिक अध्ययन किया गया है ।

मुख्य शब्द :- रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान के वन्यजीव , रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान में वनस्पति , रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान टाइगर रिजर्व , वर्तमान स्थिति , बाघिन मछली T-16 , रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान में पारिस्थितिकी संकट एवं संरक्षण ।

रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान का परिचय :-

रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान 282 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है, इसमें बफर जोन को जोड़ने के बाद, यह पार्क 392 वर्ग किलोमीटर तक बढ़ गया है। पर्वतीय क्षेत्र होने के कारण यह राष्ट्रीय उद्यान समुद्र तल से 200 से 500 मीटर ऊँचा है। 1947 में भारत आजाद हुआ और सवाईमाधोपुर का भी भारत में विलय हो गया, 1955 में इस जगह को भारत सरकार द्वारा सवाईमाधोपुर खेल अभयारण्य बनाया गया था, लेकिन इस समय बाघों का शिकार पूरे देश में था। यह स्थान भी बाघों के शिकार से अछूता नहीं रहा। बाघों के बढ़ते शिकार के कारण इस शानदार जानवर के अस्तित्व पर गंभीर संकट खड़ा हो गया था। एक समय ऐसा भी आया जब पूरे देश में बाघों की आबादी 1970 में केवल 1000 बाघों के आसपास रह गई थी, अप्रैल 1973 में भारत सरकार ने बाघों को बचाने के लिए प्रोजेक्ट टाइगर प्रोजेक्ट टाइगर की घोषणा की। सवाई माधोपुर के रणथंभौर को प्रोजेक्ट टाइगर का हिस्सा

Coordinator
IQAC-CELL
Govt. College, Rajgarh (Alwar) (Raj.)

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

बनाया गया है। भारत में कुल 50 टाइगर रिजर्व हैं। 1973 में रणथंभौर टाइगर रिजर्व में कुल 37 बाघ बचे थे, लेकिन इतने सालों के अथक प्रयास के बाद आज इस रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान में कुल 70 बाघ

Volume 6, Issue 6, June – 2021 International Journal of Innovative Science and Research Technology
ISSN No:-2456-2165

Dalbergia sissoo Leaves Chloroform Extract Prevents DMBA- Induced Skin Carcinoma in Swiss Albino Mice

Yogendra Singh Sehra and Jaimala Sharma
Department of Zoology, University of Rajasthan, Jaipur- 302004 (India)

Abstract:- ***Dalbergia sissoo*, is extensively make use of the treatment of many diseases in different parts of India. In the current investigation, cancer preventive efficacy of *D. sissoo* was evaluated on 7, 12-dimethyl benz (a) anthracene (DMBA) treated skin carcinogenesis in Swiss albino mice. Single topical treatment of DMBA followed 2 weeks later through repeated application of croton oil and continued till the completion of the experiment. Group I (vehicle treated control); group II Carcinogen treated control: Group III *Dalbergia sissoo* leaf chloroform extract control and group IV Leaf chloroform extract of *Dalbergia sissoo* 200, 400 and 600 mg/kg, 7 days before and after that for 16 weeks along with croton oil treatment.**

Keywords *:- Dalbergia sissoo Leaves, Chloroform Extract, Carcinogen.*

I. INTRODUCTION

Various parts of *D. sissoo* plant such as bark, leaves, seeds, roots and wood were being used in numerous diseases from ancient time. It is utilized not only in Ayurveda but also in Unani medicines. Earlier studies exhibited that *D. sissoo* have cardiac, antimicrobial, neural, antioxidant, antidiabetic, anti-inflammatory, antiparasitic, dermatological, analgesic, Osteogenic, reproductive, gastrointestinal and many additional impacts.

D. sissoo plant is extensively used in folklore medicine for numerous diseases. Plant bark extract was utilized in sciatica as anti-inflammatory, piles and as blood purifier. in fevers the concentrated extract of heartwood in milk was recommended. The oil was utilized on the outside in the infected ulcers and skin diseases. Plant wood was used as antileprotic, anthelmintic as well as cooling. Arial parts of the plant were used as aphrodisiac, expectorant and spasmolytic. *D. sissoo* leaves extract was used as antioxidant, anti-diabetic, analgesic, antipyretic and anticancergenic. Plant flowers were utilized for skin problems, immunity Booster and as blood purifier (Nadkarni, 1954; Ghani, 1998; Khare, 2007; Ramrakhiyani et al., 2016).

Isoflavones, amyrin, "pioalliann-A, mumingin, stigmasterol, sissotrin" have been extracted from the aerial parts of *Dalbergia sissoo* Roxb plant (Sarg et al., 1999).

II. MATERIALS AND METHODS

Chemicals: The initiator, "7, 12-dimethylbenz [a] anthracene (DMBA)" and croton oil were procured from "Sigma Chemicals Co, St Louis, MO". In acetone DMBA was dissolved at a concentration of 100 μg/100 μl.

Plant Extract: Leafs of *D. sissoo* were collected from "University of Rajasthan campus, Jaipur, Rajasthan, India". The Leaves were identified and authenticated at the Herbarium, "Department of Botany, University of Rajasthan, Jaipur" under the specimen voucher no. (RUBL 21167). The leaves were dried, coarsely powdered and soxhleted by chloroform extract at 55 -60 °C for 35 h.

Animals: The current experimental study was accompanied on seven- eight week old healthy albino mice and weighing 24 ± 2 gram, chosen from inbreed colony in the laboratory.

Parameters for Study

Cumulative no. of tumors
The total number of tumors seemed till the terminations of the experiment, were noted.

Inhibition of tumor multiplicity
Total tumors in carcinogen treated control mice – total tumors in plant extract treated mice / Total tumors in carcinogen treated control mice X 100

Statistical Analysis
Results were expressed as mean ± S.E. Comparisons between the means of the control and experimental groups were made by one-way analysis of variance (ANOVA) using the SPSS software package for windows.

Experimental Design
Mice were divided into four groups of eight mice each.

Group I: Vehicle treated Control: In this group mice were treated orally with double distilled water (100 μl/ mouse/ day) and topically on the dorsal skin with acetone (100 μl/ mouse).

Group II: Carcinogen treated Control (DMBA + Croton Oil): DMBA was applied topically with a single dose of 100 μg of DMBA in 100 μl of acetone. After 2 weeks of DMBA application, croton oil (100 μl of 1% croton oil in acetone) was applied three times per week, until the end of the experiment.

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.
Coordinator
IQAC-CELL
GOVT. College Rajgarh

Quality assessment of groundwater with special reference to fluoride of Kathumar block of Alwar district, Rajasthan, India

Rajesh Kumar Yadav, *Girdhari Lal Meena and Monika

Department of Chemistry, Government R. R. College, Alwar – 301 001 (Rajasthan) India

Email ID: drrajeshyadavchy@gmail.com

Abstract: The groundwater is the most significant and esteemed natural renewable resource of water. Kathumar is a tehsil block of Alwar district of Rajasthan (India), and the basicdrinking, domestic and irrigational necessity of water of Kathumar block are primarily accomplished by the groundwater resources, i.e., Open well, tube well and hand pumps. The groundwater of Alwar district (Rajasthan) has found to be highly saline and fluoride contaminated. This study was investigated the physicochemical analysis of twelve groundwater samples of Kathumar block of Alwar district, Rajasthan (India). The sampling of groundwater was carried out during the period of pre-monsoon season (April-May) of the year 2019. Twelve groundwater sampling sites (villages) of Kathumar block has been selected and taken the groundwater samples from various types of groundwater resources. Various physicochemical parameters such as pH, total dissolve solids (TDS), fluoride (F^-), chloride (Cl^-), nitrate (NO_3^-), total hardness (TH) and total alkalinity (TA) were estimated using the standard operating procedures of APHA. The results of the study revealed that the considerable variations in the physicochemical parameters was observed for the groundwater samples of Kathumar block of Alwar. All twelve groundwater sampling sites of Kathumar block was found to highly contaminated with fluoride and other constituents. Due to these parameters, the groundwater of Kathumar block was found to be unsuitable for drinking purpose and do not imitate withthe drinking water standards of WHO and BIS.

Keywords: Kathumar block(Alwar);Groundwater; Quality assessment; Physicochemical analysis;Fluoride

प्राचार्य
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
राजगढ़ (अलवर) राज.

Coordinator
UGC AC-CELL
Govt. College, Rajgarh (Alwar)